विश्व का सर्वाधिक प्रसारित बाल मासिक
देवपुत्र
फाल्गुन २०७३ फरवरी २०१७
ISSN-2321-3981
बसंत पंचमी
₹ १५

Think IAS...
दृष्टि The Vision
Think Drishti
Most trusted & renowned institute among IAS aspirants
पिछले डेढ़ दशक से लगातार हिन्दी माध्यम का सर्वश्रेष्ठ परिणाम
किरण कौशल 3rd Rank
अजय मिश्रा 5th Rank
लोकेश कुमार सिंह 10th Rank
प्रदीप राजपुरोहित 13th Rank
निशांत जैन 13th Rank
करेंट अफेयर्स टुडे
प्रमुख आकर्षण
महत्त्वपूर्ण लेख
टू द पॉइंट
द रिव्यू
क्या है आपकी हॉबी?
टॉपर्स की कॉपी
करेंट अफेयर्स से जुड़े संभावित प्रश्न-उत्तर
प्रिलिम्स-2017
सुपरफास्ट रिवीज़न
दूसरी कड़ी : भारत एवं विश्व का भूगोल
रणनीतिक लेख
आई.ए.एस. प्रारंभिक परीक्षा 2017
अभी से तैयारी ज़रूरी
Drishti
Current Affairs Today
Year 1 | Issue 9 | February 2017 | ₹ 100
Academic Supplement
EPW Yojana Kurukshetra
Down To Earth, Science Reporter
Modern Indian History
Prelims 2017
Superfast Revision Series- 1
Highlights
Strategy for Interview
Articles, To The Point
Debate, Prelims Mock Test
Maps
Solution-Mains 2016
Unsung heroes of Indian freedom struggle
आपके नज़दीकी पुस्तक विक्रेता के पास उपलब्ध
सब जानते हैं कि सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी सिर्फ किताबों और नोट्स से नहीं हो सकती। यह भी ज़रूरी है कि आप दिन-प्रतिदिन की घटनाओं से जुड़ने के लिए इंटरनेट पर उपलब्ध अच्छे लेखों को पढ़ते रहें और अच्छी डिबेट्स को सुनते रहें।
आपकी इन सभी समस्याओं को सुलझाने के लिए हम आपको आमंत्रित करते हैं अपनी लोकप्रिय वेबसाइट पर
www.drishtiias.com
वितरण एवं विज्ञापन के लिए संपर्क करें- (+91) 8130392355
641, Ist Floor, Dr. Mukherji Nagar, Delhi-110009 | Contact : 87501 87501, 011-47532596

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

फाल्गुन	२०७३	▪	वर्ष ३७
फरवरी	२०१७	▪	अंक ८

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	१५ रुपये
वार्षिक	:	१५० रुपये
त्रैवार्षिक	:	४०० रुपये
पंचवार्षिक	:	६०० रुपये
आजीवन	:	११०० रुपये

कृपया शुल्क भेजते समय
चेक/ड्राफ्ट पर केवल देवपुत्र लिखें।

संपर्क

४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००३३९,
२४००४३९

e-mail -devputraindore@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

गत मास हमने दशमेश गुरू गोविन्द सिंह का ३५०वां जन्मोत्सव राष्ट्रीय स्तर पर सम्पन्न किया। अनेक छोटे बड़े कार्यक्रम देशभर में आयोजित हुए। खालसा पंथ के संस्थापक अंतिम गुरू और ग्रंथ साहिब को भविष्य के लिए गुरू के रूप में स्थापित करने वाले वे अपने प्रकार के महापुरुष थे। सम्पूर्ण हिन्दू समाज को जोड़ने और उनमें 'सिंहत्व' का भाव पैदा करने का अद्‌भुत कार्य किया उन्होंने। इतिहास में इसलिए भी वे अमर हैं कि अपने पूज्य पिता से लेकर अपने लाड़ले बेटों तक का बलिदान उन्होंने अपनी आंखों से देखा।

मातृभूमि, धर्म और राष्ट्र की अस्मिता के लिए अपने जीवन को होम देने वाले सहस्रों उदाहरणों से तो हमारा इतिहास भरा पड़ा है, किन्तु इसे अत्यंत श्रेष्ठ और पुण्य कार्य मानकर सम्पूर्ण परिवार ही उजड़ गया ऐसे उदाहरण भी हमें अपने इतिहास में मिलते हैं। पन्ना धाय ने अपने इकलोते बेटे का सिर अपने सामने कट जाने दिया, बहादुर शाह जफर के चार बेटों के सिर कलम कर के उसके सामने थाल में परोस दिए गए। चाफेकर बन्धुओं की माँ अपने सामने ३ बेटों को फांसी पर लटकते देख पाई। ऐसे अनेक उदाहरणों का साक्षी है हमारा इतिहास। अत्यंत गौरवशाली इतिहास रचा गया इन बलिदानों के कारण।

परन्तु बच्चो! आज मैं आपको अपने कुछ ऐसे महापुरुषों का स्मरण करा रहा हूं जिन्होंने राष्ट्र या धर्म के लिए मरने के बजाय जिंदा रहने की बात कही। शायद उनका मानना था कि मातृभूमि के लिए आवश्यकता पड़ने पर बलिदान जितना आवश्यक है, उतना ही मातृभूमि के गौरवशाली भविष्य के लिए जीवित रहकर काम करना आवश्यक है।

*स्वामी विवेकानंद जिनका स्मरण भी हमने गत मास सम्पूर्ण देश में 'युवा दिवस' मनाकर किया है ऐसे ही महापुरुष थे। उन्होंने युवाओं को सशक्त, बलिष्ठ और स्वाभिमानी बनकर राष्ट्र को जीने का संदेश दिया। वे कहते थे कि मुझे ऐसे ही '**कुछ युवा मिल जाए तो मैं भारत का भाग्य बदल दूंगा**'। सुभाष बाबू जब कहते थे कि '**तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा**'। तो उनका अर्थ भी शायद यही था। एक और दौर था जिसमें डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने कहा था कि '**मुझे कुछ और दीनदयाल मिल जाते तो मैं भारत का चित्र बदल सकता था**'।*

यह कुछ प्रसंग स्पष्ट करते हैं कि समाज और राष्ट्र के लिए केवल मरने वाले (बलिदान होने वाले) ही नहीं तो खम ठोकर खड़े रहने वाले (जिंदा रहने वाले) लोग भी चाहिए। आज की आवश्यकता भी यही है।

देश को सदी का सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र बनाने के लिए हमें यह सोचना ही पड़ेगा।

आपका
बड़ा भैया

अनुक्रमणिका

कहानी

- खुशियों का बसंत - डॉ. सेवा नंदवाल ०६
- टुन्ना और तितली - विष्णुप्रसाद चतुर्वेदी १०
- उद्यान की सैर - डॉ. राकेश चक्र १८
- सांच को आंच नहीं - आर. के. वसिष्ठ २६
- खतरे की घण्टी - भगवती प्रसाद द्विवेदी ३०
- घर बनाओ प्रतियोगिता - बद्रीप्रसाद वर्मा 'अनजान' ३८

नाटक

- स्वच्छता सर्वोपरि - कुसुम अग्रवाल १२

कविता

- सरस्वती वंदना - डॉ. विनोदचंद्र पाण्डेय ०५
- गुड़ गुड़ हुक्का - सूर्यकुमार पाण्डेय ०९
- पहाड़ से धूल - इन्दू पाराशर १६
- आ गई सर्दियां - राजनारायण चौधरी २०
- स्वच्छ भारत - दीपा श्रीवास्तव २२
- लोरी - सुरेन्द्र 'अंचल' ३२
- शिक्षा तो सबका... - कुलभूषण कालड़ा ३७
- ऐसे बने रिमोट - डॉ. शेषपाल सिंह 'शेष' ४४
- ठिठुरा सूरज - राजेन्द्र देवधरे 'दर्पण' ४६
- चूहे ही की बारात - अविनाश मिश्र 'अवि' ४७

स्तम्भ

- गाथा बीर शिवाजी की.. - १०
- कॅरियर -प्रो (डा.) जमनालाल बायती ३४
- आपकी पाती - ४०
- हमारे राज्य पुष्प - डॉ. परशुराम शुक्ल ४१
- पुस्तक परिचय - ४२

चित्रकथा

- नोटबंदी - देवांशु वत्स २९
- अनूठा निबंध - देवांशु वत्स ४३

बाल प्रस्तुति

- नासमझ बांछा - छवि कानूनगो ०८
- चिड़िया - पूर्वी ठाकुर ४०
- कोयल - राजीव त्रिपाठी ५०
- फूल - सुनील भार्गव ५०

सरस्वती वंदना

कविता : विनोदचंद्र पाण्डेय 'विनोद'

ज्ञान सभी भक्तों को देती।
अन्धकार मन का हर लेती।।
तुम विवेक, विद्या की देवी,
तेरा कोटि-कोटि अभिनन्दन।
सरस्वती माँ! शत-शत वन्दन।।
वीणा का संगीत सुनाती।
गीत मनोहर मोहक गाती।।
फूटा करता सदा सरस स्वर
मन्त्र-मुग्ध होता है जन-जन।
सरस्वती माँ! शत -शत वन्दन।।
देख समुज्ज्वल रूप तुम्हारा।
विस्मित होता है जग सारा।।
पुस्तक-माला से हो शोभित,
सुन्दर श्वेत हंस है वाहन।
सरस्वती माँ! शत -शत वन्दन।।
जिसे तुम्हारा वर मिल जाता।
उसका हृदय-कमल खिल जाता।।
पा तेरा आशीष सुमंगल,
ज्योतिर्मय हो जाता जीवन।
सरस्वती माँ! शत -शत वन्दन।।
हम पर निज करुणा बरसाओ।
हमको सही राह दिखलाओ।।
कृपा करो हम सबके ऊपर,
करते हम नित पूजन-अर्चन।
सरस्वती माँ! शत -शत वन्दन।।

• लखनऊ (उ.प्र.)

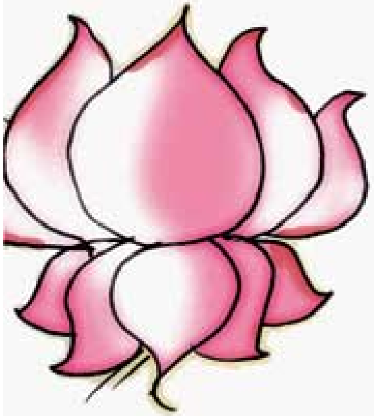

खुशियों का बसंत

कहानी : डॉ. सेवा नंदवाल

मनोज आचार्य जी के कक्षा में पहुंचते ही विद्यार्थियों ने खड़े होकर अभिवादन कर दिया। मनोज आचार्य जी उत्तर देते हुए बैठने का इशारा करते हुए कहा– ''तुम सबको बसंत पंचमी की शुभकामनाएँ, पता है ना आज हमारे विद्यालय में यह उत्सव मनाया जाएगा।

''हाँ आचार्य जी पता है, आज सरस्वती देवी का पूजन किया जाता है क्योंकि आज उनका जन्मदिन है'' – मोहित ने मुस्कराते हुए कहा।

''वैसे सरस्वती माता और उनकी धारण की हुई वस्तुओं से हमें बहुत सारी शिक्षाएं मिल जाती हैं। पर ऋतुराज बसंत से...?'' –कहते हुए दिव्या चुप हो गई।

''ऋतुराज बसंत से भी अनेक सीख मिलती है, आखिर ऋतुराज की संज्ञा इसे यूं ही नहीं मिली और बच्चो...सीख तो हमें प्रत्येक पर्व–त्योहार से मिल सकती है बस उसे खोजने की इच्छा शक्ति होनी चाहिए'' – मनोज आचार्य जी ने मुस्कुराते हुए कहा।

कुछ विद्यार्थी प्रश्नवाचक नजरों से उनकी ओर घूरने लगे। मनोज आचार्य जी ने आश्वस्त किया– ''हाँ बच्चो! विश्वास मानो, बसंत के प्रतीकों से शिक्षा ग्रहण कर हम अपने जीनव को आनंद का पर्याय बना सकते हैं।'' विद्यार्थियों की मुखमुद्रा से लगा कि वे शिक्षक की बात से पूर्ण आश्वस्त नहीं हुए।

''देखो भाई नवीनता को स्वीकारने, उसको पोषित करने और नए को प्रोत्साहित करने का संदेश देता है बसंत'' – मनोज आचार्य जी बोले। हाँ आचार्य जी! कहा भी गया है कि परिवर्तन हमेशा बेहतर होता है।'' – नकुल बोला। हाँ परिवर्तन याने नयापन, इस बसंत में नए विचारों, नई सोच और नई चुनौतियों का खुलकर स्वागत करो। स्वयं को पुराना नहीं पहले से नया देखो। कितना आनंद आएगा। तुम देखते हो इस ऋतु में पेड़ों पर नई कोपलें खिलती हैं, पौधों पर कलियाँ आती हैं। आम के वृक्षों पर बौर आ जाते हैं... इन सब चीजें के द्वारा नवीनता का संदेश प्राप्त होता है।'' –अध्यापक ने समझाया।

''जी आचार्य जी, इस समय सरसों फूलती है, पीली–पीली और गुलमोहर के लाल फूल भी'' – प्रीति चहकी। ''बिलकुल खिलते हैं और मन को प्रसन्न करते हैं। एक बात पर तुमने ध्यान दिया होगा...संगीत ना हो तो हमारा जीवन कितना नीरस, फीका नजर आता है...'' – अध्यापक ने कहना चाहा तो दक्ष बीच में टपक पड़ा–हाँ, आचार्य जी! संगीत हमारी जान है, मैं तो हमेशा रेडियो चालू कर गाने सुनते हुए पढ़ाई करता हूँ।''

मनोज आचार्य जी मुस्करा पड़े–''मै उस संगीत की बात नहीं कर रहा...मैं कह रहा हूं कि मोबाईल की रिंगटोन और रेडियो के धूमधड़ाके से इतर कभी मंदिर की घंटियों को ध्यान से सुनकर देखो, कमरे के बाहर दालान में चहचहाती चिड़ियों की चहक सुनो और पत्तों से गुजरती हवा की सरसराहट अनुभव करो, यही है जीवन का असली संगीत। इन संगीतों का आनंद लोगे तो प्रकृति ने निकट पहुंचोगे और संगीतमय हो जाएगा।''

''हाँ, आप ठीक कहते हैं, मुझे पक्षियों का कलरव बहुत अच्छा लगता है।'' – मोहित ने स्वीकारा। ''आचार्य जी बसंत ऋतु में रंग बिरंगे फूलों की छटा देखते ही बनती है।'' –दिव्या ने प्रशंसा की। ''हाँ बच्चो! बसंत है ही रंगों का प्रतीक। इस ऋतु में धरती इंद्रधनुषी सतरंग में रंग जाती है। जीवन के प्रत्येक रंग का आनंद लेना सीखो। हार–जीत, मस्ती, तनाव, संघर्ष, प्रशंसा, आलोचना...ये सब जीवन के विविध रंग हैं और प्रत्येक का अपना महत्व है'' – मनोज आचार्य जी ने समझाया।

आचार्य जी! बसंत को मौजमस्ती का मौसम भी कहा जाता है ना? विनीता ने पूछ लिया। ''हाँ बच्चो!

बसंत, प्यार में भीग जाने का मौसम है, प्रत्येक वाणी से प्यार करो, अपने आप से प्यार करो फिर देखो...सारी दुनिया बदल जाएगी।''– मनोज आचार्य जी ने भावुक अंदाज में कहा। ''आचार्य जी ज्यादा मौजमस्ती करेंगे तो पढ़ाई लिखाई चौपट हो जाएगी...''– दक्ष ने कहना चाहा। ''अति किसी भी वस्तु की बुरी होती है। हाँ याद आया...पता है अपने उद्देश्य की साधना का सबसे अनुकूल समय माना जाता है बसंत?''–मनोज आचार्य जी बोले। ''क्या मतलब आचार्य जी?''– प्रतीक को समझ नहीं आया। ''मतलब यह कि पढ़ाई के लिए यह सबसे उत्तम और अनुकूल समय उपलब्ध कराता है। दरअसल खुशनुमा सुबह और सुहावनी शाम चित्त को एकाग्र करने में सहायक सिद्ध होती है। एकाग्र होकर लक्ष्य की साधना करोगे तो प्रकृति भी आपको सहयोग देती नजर आएगी'' – मनोज आचार्य जी ने स्पष्ट किया।

''जी हाँ आचार्य जी! मेरे पिताजी भी कहते हैं कि अगर दिल लगाकर काम करोगे तो प्रकृति भी सहयोग करने को तत्पर हो जाती है''– मोहित बोला। ''बिल्कुल सौ प्रतिशत ठीक कहते हैं तुम्हारे पिताजी। अब जरूरत इस बात की है कि हम बसंत पंचमी के प्रतीकों को समझ कर अपने व्यक्तित्व में आत्मसात् कर अपने लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास करें।''– मनोज आचार्य जी ने कहा।

तब तक विद्यालय की घंटी घनघना उठी। मनोज आचार्य जी ने कहा– ''चलो बच्चो! अब प्रार्थना स्थल पर सरस्वती पूजन का कार्यक्रम आयोजित है। ''सारे विद्यार्थी जाने के लिए पंक्तिबद्ध होने लगे।

• इन्दौर (म.प्र.)

॥ बाल प्रस्तुति ॥

(भवालकर कहानी प्रतियोगिता में पुरस्कृत)

नासमझ वांछा

कहानी : छबि कानूनगो

वांछा ने शाला जाना शुरु ही किया था कि उसकी माँ ने एक फूल से कोमल बालक को जन्म दिया। बच्चा भी कैसा प्यारा जैसे मक्खन का गोला। हाथ लगाओ तो डर लगता है कि कहीं भय्यू को कुछ हो न जाए। इसलिए वांछा उसको गोद में उठाने से डरती बचती थी।

एक बार माँ किसी काम से गई थी। भय्यू कहाँ रहे? वे उसे उसकी गोद में सुलाकर चली गई। लेकिन भय्यू तो सबके हाथों को अच्छी तरह से पहचानने लगा था। जरा माँ से दूर हुआ नहीं कि भोंपू चालू। न खेलकूद, न पढाई-लिखाई। वह माँ को घर का कुछ भी काम नहीं करने देता है। लेकिन यदि वांछा बच्चे को न संभाले तो आखिर कौन संभालेगा? उसे दिन भर गोद में ताने घर में वह इधर-उधर घूमती रही।

एक दिन ऐसे ही वांछा की माँ कुछ घरेलू काम में लगी थी पासवाली गुड्डी ने वांछा को आवाज दी- ''आ! वांछा हम लोग खेलें।'' तो वह नन्हे-मुन्ने को वहाँ आँगन में अकेले खटिया पर डालकर गुड्डी के पीछे हो चली थी। वांछा ने गुड्डी से यह शिकायत भी कर डाली कि जब से हमारे घर में भय्यू आया है हर कोई आने जाने वाले उसके लिए नए-नए कपड़े, खेल-खिलौने, टॉफी वगैरह लेकर आते हैं और उसे ही प्यार करते हैं, हँसते हैं, ठहाके लगाते हैं मुझे तो कोई भी प्यार नहीं करता है। मैं अकेली, गुपचुप सी रहने लगी हूँ।

तभी वांछा की माँ की आवाज हवा में गूँजी-''अरे! वांछा कहाँ मर गई?'' वांछा के अन्दर आते ही माँ ने उसे दो थप्पड़ जड़ दिए।

''घर का थोड़ा भी

कामकाज नहीं करती है तेरी उमर की लड़की बरतन–भांडे मांजती और रोटी तक बना डालती हैं एक है, तू। गुड्डू को छोड़कर कहाँ मर गई थी?'' उसकी माँ ने बाहर आने पर देखा कि बिल्ली खिड़की से कूदकर भागी। यदि बिल्ली भय्यू को काट खाती तो अभी लेने के देने नहीं पड़ जाते। उसे टिटनेस के टीके लगवाना पड़ते और मरहम पट्टी के लिए दवाखाना लेकर भागना पड़ता, सो अलग माँ की डांट–फटकार सुनकर वांछा रोने लगी। उसे वाकई अपने आप पर पछतावा हुआ कि क्यों वह असमय खेलने–कूदने बाहर चली गई थी।

सच ही कह गया है कि आधी अधूरी इच्छा से किया गया काम कभी सफल नहीं होता है।

● इन्दौर (म.प्र.)

मंगल कामना

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत् ।।

सब सुखी हों।
सब रोगरहित हों।
सब कल्याण का साक्षात्कार करें।
दुःख का अंश किसी को भी प्राप्त न हो।

रसोमा लेबोरेटरीज प्रायवेट लिमिटेड

गुड़-गुड़ हुक्का

कविता : सूर्यकुमार पांडेय

गुड़-गुड़-गुड़-गुड़,
गुड़-गुड़-गुड़
हुक्का पियो न दादा जी
और आपकी बढ़ जाएगी
खांसी इससे ज्यादा जी
रात-रात भर खांसोगे तब
हो जाएंगे रोगी जी
डॉक्टर ढेरों रुपए लेगा
तभी दवाई होगी जी
बुरी बात से दूर रहेंगे
करिए हमसे वादा जी
गुड़-गुड़-गुड़-गुड़,
गुड़-गुड़-गुड़
हुक्का पियो न दादा जी

● लखनऊ (उ.प्र.)

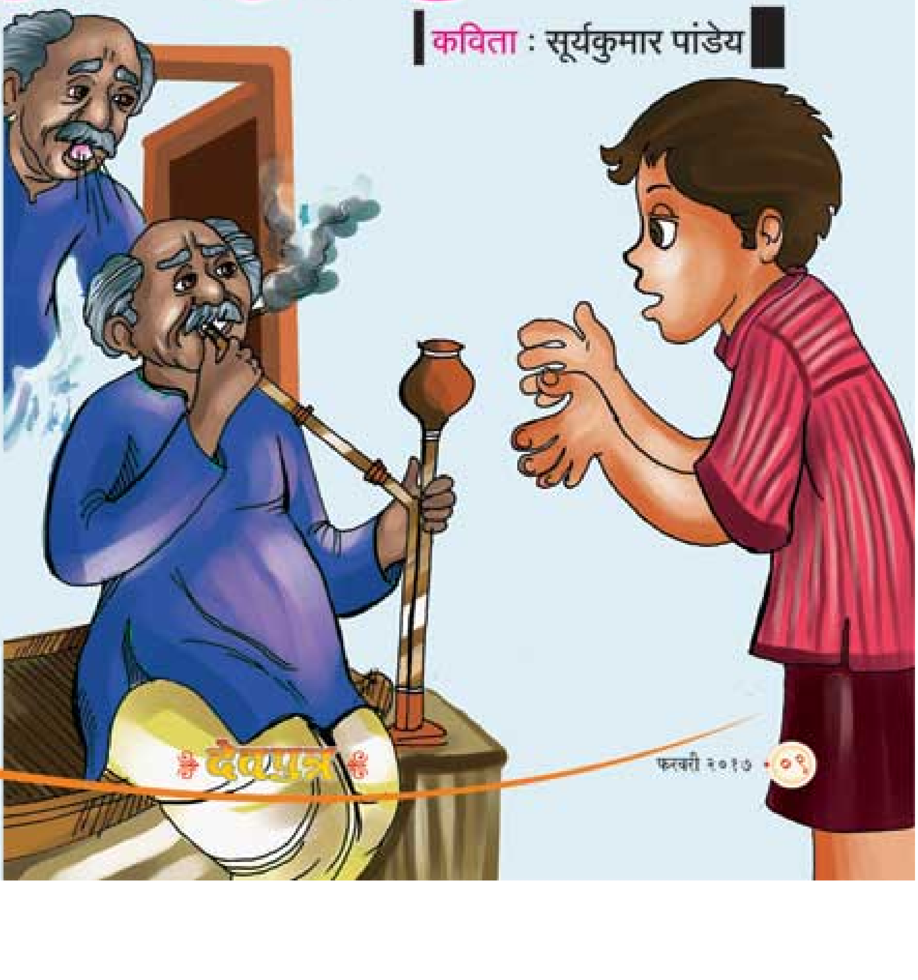

टुन्ना और तितली

कहानी : विष्णुप्रसाद चतुर्वेदी

टुन्ना एक छोटी सी लड़की थी। एकदम खिलौना गुड़िया जैसी। हंसती तो लगता कि संगीत बज रहा है। टुन्ना को माँ से बहुत प्यार था। शाला से आने के बाद वह अपनी माँ के आगे पीछे ही घूमती रहती थी।

टुन्ना की माँ घर के काम निपटाती तो टुन्ना कुछ मदद कर दिया करती थी। टुन्ना के घर के आगे कुछ खाली जमीन थी। टुन्ना की माँ ने उस जमीन पर कई प्रकार के पौधे लगा रखे थे। टुन्ना की माँ उन पौधों को नियमित रूप से पानी देती थी। मिट्टी को खुरपी से पोला करती थी। टुन्ना की माँ सूखी पत्तियों व सब्जी व फलों के छिलकों को कभी बाहर नहीं फेंकती थी। वह उन्हें एक गड्ढे में डाल कर रखती थी। कुछ समय बाद वे सड़कर खाद में बदल जाते थे। तब उन्हें पौधों के पास की मिट्टी में मिला दिया जाता था। इससे पौधों को पोषण मिलता था। अच्छे पोषण के कारण टुन्ना के बगीचे के पौधे स्वस्थ रहते थे। उसके बगीचे में कई तरह के फूल खिले रहते थे।

माँ की तरह टुन्ना को भी पौधों से प्यार हो गया था। उसने भी एक गमले में फूल वाले पौधे के बीज बोए थे। बीज बोने के बाद से वह प्रतिदिन गमले में पानी देने लगी थी। प्रतिदिनि सुबह उठते ही टुन्ना गमले के पास जाती और देखती कि बीज से अंकुर निकले या नहीं। शाला से आने के बाद भी वह यही देखती थी।

टुन्ना को अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। कुछ दिन बाद ही गमले में छोटे–छोटे पौधे निकल आए थे। उन पौधों को देख टुन्ना बहुत प्रसन्न हुई थी। उन दिनों घर पर कोई आता तो टुन्ना उसे अपने गमले के पास ले जाती और कहती– ''देखो ये पौधे कितने सुन्दर हैं। इन्हें मैंने उगाया है। मैं इन्हें रोज पानी देती हूँ। कुछ दिन बाद इन पर फूल आएंगे।''

टुन्ना को अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। कुछ दिन बाद ही गमले में छोटे छोटे पौधे निकल आए थे। उन पौधों को देख टुन्ना उसे अपने गमले के पास ले जाती और कहती– ''देखो ये पौधे कितने सुन्दर हैं। इन्हें मैंने उगाया है। मैं इन्हें रोज पानी देती हूँ। कुछ दिन बाद इन पर फूल आएंगे।''

टुन्ना की स्नेहभरी देखभाल से पौधे तेजी से बढ़ने लगे थे। कुछ दिन बाद उनकी शाखाओं पर कलियां निकल आई थी। तब टुन्ना पौधों की देखभाल और भी सावधानी से करने लगी थी।

शाला की छुट्टियाँ चल रही थी। टुन्ना लगभग दिनभर बगीचे में अपने गमले के पास ही बैठी रहती थी। उसे यह भय रहता था कि कहीं कोई उन कलियों को तोड़ नहीं दे।

कुछ दिन बाद कलियां खिलकर फूलों में बदल गई। टुन्ना ने पिताजी से कहकर फूलों के साथ चित्र खिंचवाए थे। टुन्ना के पिताजी ने उन चित्रों को फेसबुक पर डाला तो बहुत अधिक लोगों ने उन को पसंद किया था। कई ने तो बहुत अच्छी टिप्पणियां भी लिखी थी। टुन्ना को वह सब बहुत अच्छा लगा था। उसे पढ़ाई में भी मजा आने लगा था।

उन्हीं दिनों की बात है टुन्ना गमले के पास बैठी थी कि एक तितली उड़ती हुई आई और उसके गमले पर खिले एक फूल पर बैठ गई। ट ुन्ना को लगा कि तितली फूल का रस चूस कर उसे हानि पहुँचाएगी। टुन्ना ने तितली को भगा दिया। टुन्ना ने एक बड़ी थैली से गमले को इस तरह ढक दिया कि कोई तितली फूलों पर नहीं बैठ पाएं।

एक दिन टुन्ना अपने गमले के पास बैठी कहानी की किताब पढ़ रही थी तो उसे सुनाई दिया– ''टुन्ना तुमने यह ठीक नहीं किया। तुम्हें फूलों को इस तरह नहीं ढकना चाहिए।''

टुन्ना ने चारों ओर देखा, उसे कोई भी दिखाई नहीं दिया। फिर आवाज आई– ''टुन्ना, मैं नीलिमा तितली बोल रही हूँ।'' टुन्ना ने उस ओर देखा जिस ओर से आवाज आई थी। पास ही एक पेड़ की टहनी पर बैठी नीले रंग की एक तितली पंख फड़फड़ा रही थी।

''मैं तुम्हें अपने लगाए फूलों का रस नहीं चूसने दूंगी। मैंने बहुत परिश्रम से इन्हें उगाया है।'' टुन्ना ने कहा।

''हम तो फूलों की मित्र हैं। हमारे बिना फूलों का आगे विकास नहीं हो सकता। हमारे बिना तुम्हारे फूल कितने दुखी लग रहे हैं। टुन्ना, तुम्हें मेरी बात पर विश्वास नहीं हो तो फूलों से ही पूछ लो।'' नीलिमा ने कहा।

नीलिमा की बात सुन टुन्ना ने फूलों पर से थैली को कुछ खोल दिया। टुन्ना कुछ कहती उससे पूर्व ही एक फूल बोला– ''हाँ टुन्ना, नीलिमा सही कह रही है। तितलियाँ हमसे भोजन तो लेती हैं पर बदले में परागण में मदद करती हैं। परागण के बिना फूलों से बीज नहीं बन सकते। बीज नहीं बनेगें तो अगली ऋतु में और पौधे कैसे उगेगें?''

''अच्छा तो यह बात है।'' यह कहते हुए टुन्ना ने थैली को पूरी तरह हटा दिया। अब तितलियां रोज फूलों पर बैठने लगी। कुछ दिनों बाद फूलों के स्थान पर छोटे छोटे फल नजर आने लगे। फलों के पकने पर टुन्ना ने उनमें से बीज निकाल कर रख लिए। टुन्ना प्रसन्न थी कि इन बीजों से अगली ऋतु में फूलों के पौधे अधिक संख्या में उगा सकेगी।

• पाली (राज.)

पात्र

विद्यार्थी - संयम, सलोनी, भाविक, भव्या, स्नेहा, कार्तिक

शशांक जी - कक्षा सात के अध्यापक

शुक्ला जी - शाला के प्रधानाचार्य

(दृश्य- प्रथम)

(कक्षा सात के कमरे का। सभी बच्चे अपने-अपने स्थान पर बैठे हैं। बच्चे काफी उत्साहित लग रह है। शशांक जी उन्हें कुछ समझा रहे हैं।)

शशांक जी- बच्चो! यह तो तुम सबको पता ही होगा कि कल हमारे विद्यालय का स्थापना दिवस है।

सभी बच्चे-(एक साथ) जी हाँ!

शशांक जी- हर बार की तरह इस बार भी हम यह दिन मनाएंगे। लेकिन अबकी बार अंदाज कुछ हट कर होगा।

संयम - तो क्या अपकी बार सांस्कृतिक संध्या नहीं होगी?

शशांक जी- होगी परन्तु कुछ दिनों बाद और उसमें भाग लेने के लिए विद्यार्थियों का चयन कुछ अलग तरीके से किया जाएगा।

भव्या - पर कैसे? हर बार तो जो बच्चा अच्छा प्रदर्शन करता है उसे चुन लिया जाता है, क्या यह तरीका सही नहीं है? परन्तु इससे कई ऐसे बच्चे पीछे रह जाते हैं जो शर्मीले होते हैं या किसी कारणवश उस समय अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाते।

स्नेहा- आप ठीक कह रहे हैं इस तरीके से वही बच्चे बार बार चुन लिए जाते हैं जो एक बार अध्यापकों की नजरों में चढ़ जाते हैं। कार्यक्रम में भाग लेने की इच्छा और भी बहुत से बच्चों की होती है।

सलोनी- सो तो ठीक है परन्तु कार्यक्रम अच्छा करने के लिए तो अच्छे कलाकारों की आवश्यकता होती है और जिन बच्चों को अनुभव होता है, वही अच्छा प्रदर्शन कर पाते हैं।

भाविक - इसका अर्थ है कि बाकी बच्चों को तो सीखने का मौका ही नहीं मिलना चाहिए? ये तो सरासर गलत है।

शशांक जी- तुम लोग आपस में बहस मत करो। हमने इस समस्या का हल निकाल लिया है।

सभी बच्चे - वह क्या है?

शंशाक जी- कल विद्यालय के स्थापना दिवस पर हर कक्षा के विद्यार्थी अपनी-अपनी कक्षा को सजाएंगे और जिस बच्चे का योगदान प्रधानाचार्य जी को अच्छा लगेगा, उसी को कार्यक्रम में हिस्सा लेने दिया जाएगा।

संयम - वाह! क्या अनोखा तरीका निकाला है चयन का।

सलोनी- यह ठीक रहेगा, इससे सभी बच्चों को कुछ कर दिखाने का मौका भी मिलेगा।

स्वच्छता

शशांक जी– तो ठीक है आप सब बारी–बारी मुझे बता दीजिए कि कौन क्या करेगा।

स्नेहा– मेरे घर में बहुत सुन्दर बगीचा है। मैं वहां से कुछ फूल लेकर पुष्प गुच्छ बना लाऊंगी तथा शिक्षक की मेज पर सजा दूंगी।

भाविक– मैने रंगीन कागज के सुन्दर–सुन्दर कलाकृतियां बनानी सीखी थीं। मैं वह बनाकर लाऊंगा पूरी कक्षा में लटका दूंगा।

शशांक जी– वाह तुम तो छुपे रुस्तम निकले। संयम, तुम क्या करोगे?

संयम – मैं कक्षा की दीवारों पर चिपकाने के लिए कुछ सुन्दर व ज्ञानवर्धक पोस्टर बना लाऊंगा। देखना उनसे अपनी कक्षा का रूप ही बदल जाएगा।

भव्या– मैंने इस बार छुट्टियों में कुछ कलाकृति बनाई थीं। मैं वह लाकर कक्षा के मुख्य द्वार के पास लगा दूंगी।

सर्वोपरि

नाटक : कुसुम अग्रवाल

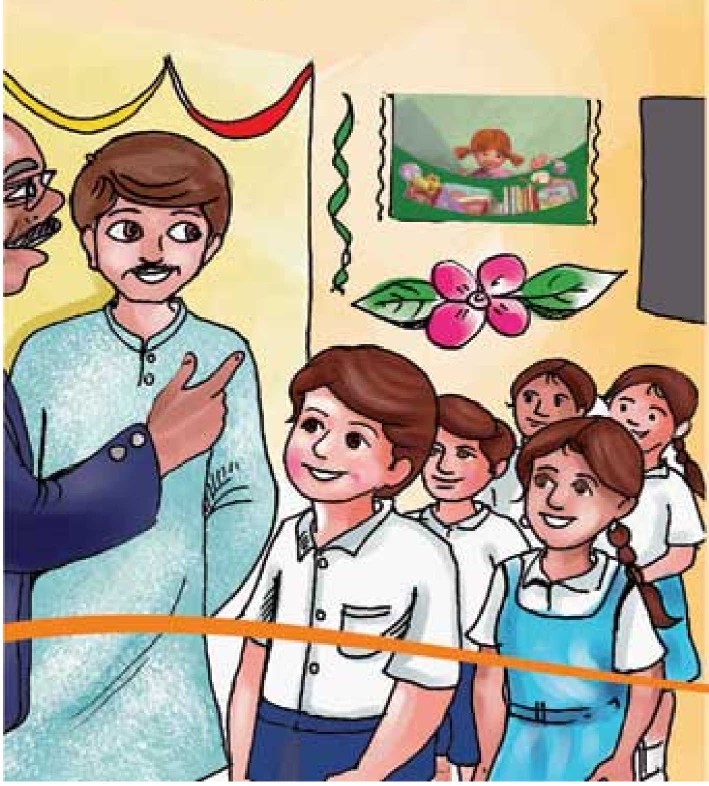

सलोनी– अरे भाई तुम सबने तो अच्छे अच्छे काम चुन लिए। अब मैं क्या करूँ? ठीक है तो मैं कक्षा के सामने वाले बरामदे में सुन्दर रंगोली बना दूंगी। मुझे रंगोली बनानी बहुत अच्छी तरह से आती है।

शशांक जी– बस बस अब काफी हो गया, अब इससे ज्यादा कुछ करने की जरूरत नहीं। आवश्यकता से अधिक सजावट भी अच्छी नहीं लगती।

(तभी कार्तिक कक्षा में प्रवेश करने की अनुमति मांगता है।)

कार्तिक – क्या मैं अन्दर आ सकता हूं?

शशांक जी– हाँ, आ जाओ, पर तुम इतनी देर थे कहां?

कार्तिक– मैं दूसरी कक्षा में गया था। मेरा छोटा भाई बहुत रो रहा था इसलिए उसके अध्यापक ने बुलाया था।

शशांक जी– ठीक है, बैठ जाओ। (फिर सभी बच्चों की ओर मुंह करके) तो बच्चो! याद रखना अपना–अपना काम। अब देखते है कौन बाजी मारता है।

कार्तिक– कैसा काम?

शशांक जी– कार्तिक! तुमको देरी हो गई, अब तो कक्षा सज्जा के सारे काम बंट चुके हैं।

कार्तिक – परन्तु, यदि मैंने कुछ नहीं किया तो मेरा चयन कैसे होगा? अबकी बार मैं नाटक में हिस्सा लेना चाहता हूँ। मुझे अभिनय का बहुत शौक है।

शशांक जी– ठीक है तो तुम इन सबकी मदद कर देना या फिर जो तुम्हारी इच्छा हो कर लेना।

कार्तिक– परन्तु मैं क्या करूँ?

शशांक जी– यह मैं कैसे बता सकता हूं तुम खुद निर्णय लो।

(यह कहकर वे कक्षा से बाहर चले जाते हैं।)

(दृश्य द्वितीय)

(अगले दिन कक्षा सात का ही कमरा। कमरा खूब सजा संवरा साफ सुथरा लग रहा है। सभी बच्चे साफ

सुथरी गणवेश में अपनी अपनी जगह पर बैठे हैं। शशांक जी का प्रधानाचार्य शुक्ला जी के साथ प्रवेश)

सभी बच्चे (एक साथ उठकर) – शुभ प्रभात !

शुक्ला जी– शुभ प्रभात! कमाल है तुमने सबने मिलकर तो कमरे का रूप ही बदल दिया है। काफी मेहनत की है तुम लोगों ने।

सभी बच्चे– जी!

शशांक जी– बच्चों! अब तुम आकर प्रधानाचार्य जी को बताओ कि इस सज्जा में किसका क्या योगदान है।

शुक्ला जी (मेज पर पुष्प गुच्छ की ओर इशारा करके)– बहुत सुन्दर पुष्प सज्जा है, यह किसने की है?

स्नेह (खड़ी होकर)–मैंने,यह मेरी माँ ने सिखाई है।

शुक्ला जी (पोस्टर की ओर इशारा करके)– काफी सुन्दर पोस्टर हैं, किसने बनाए हैं?

संयम (खड़ा होकर) मैंने, मैंने पोस्टर प्रतियोगिता में भी प्रथम स्थान प्राप्त किया था।

शशांक जी– वाह! क्या खूब यह कागज में झाड़फानूस भी कम आकर्षक नहीं है।

भाविक – ये मैंने बनाए हैं। ये मैंने हॉबी क्लासेस में सीखे थे।

शुक्ला जी– रंगोली तो मैंने कक्षा में प्रवेश करते ही देख ली थी और मुझे पता है वह सलोनी ने बनाई होगी। वह विद्यालय में पहले भी सुन्दर रंगोलियाँ बना चुकी है।

सलोनी – जी! मैं रंगोली प्रतियोगिता में सदा भाग लेती हूँ।

शशांक जी– वहाँ पेटिंग देखिए, वह भव्या ने बनाई है कितनी सजीव दिखती है।

शुक्ला जी– वास्तव में सजीव है। (फिर कार्तिक की ओर इशारा करके) बेटा तुमने क्या सजावट की है। तुम अभी तक चुप क्यों हो?

कार्तिक – सर! मुझे क्षमा कीजिए, मेरा कक्षा को सजाने में ऐसा कोई योगदान नहीं है। मैंने तो सभी दोस्तों की मदद की है। हाँ! एक काम मैंने अवश्य किया है। मैंने पूरी कक्षा की सफाई की है। दीवारों, फर्श, श्याम पट्ट यहां तक कि सभी बैंचों को भी साफ किया है। मेरे मित्रों से कुछ फूल कागज के टुकड़े रंग आदि जो इधर–उधर बिखर गए थे, मैंने उन्हें उठाकर कचरा पात्र में डाल दिया ताकि कक्षा साफ सुथरी लगे।

प्रधानाचार्य जी– बेटा कार्तिक! जानते हो तुमने अनजाने में ही कक्षा की सजावट का सबसे महत्वपूर्ण कार्य किया है वह है कक्षा को स्वच्छ बनाने का। ऊपरी सजावट चाहे कितनी भी हो, जब तक जगह साफ सुथरी नहीं हो उसका कोई महत्व नहीं होता। स्वच्छता सबसे महत्वपूर्ण और सर्वोच्च है। (बच्चों की ओर मुंह करके) सोचो यदि कक्षा में चारों ओर गंदगी होती तो क्या ये कमरा इतना साफ व सुन्दर लग सकता था?

सभी बच्चे – नहीं ....!

प्रधानाचार्य जी– इसका मतलब आज की बाजी कौन जीता?

सभी बच्चे – कार्तिक.......कार्तिक.......कार्तिक।

शशांक जी– कार्तिक, तुम नाटक में भाग लेना चाहते थे ना, अब तुम उसमें अवश्य भाग ले सकोगे और हाँ तुम उस नाटक में नायक का अभिनय करोगे।

कार्तिक– क्या सचमुच ऐसा होगा? क्या मेरा सपना सच हो जाएगा?

प्रधानाचार्य जी – क्यों नहीं, यह सब चयन विधि के नियमानुसार हो रहा है। (फिर सभी बच्चों से) तुम सबने भी बहुत सुन्दर काम किया है। तुम सब भी कार्यक्रम में भाग ले सकोगे।

सभी बच्चे (एक साथ)– धन्यवाद !

(परदा गिरता है।)

● कांकरोली (राज.)

पहुँचाओ तो जानें

• राजेश गुजर

बसंत पंचमी पर सरस्वती पूजन के लिए इन बच्चों को माँ सरस्वती के पास पहुँचाओ।

पहाड़ से धूल

कविता : इन्दु पाराशर

नन्हीं बोली नानी-नानी
मुझे सुनाओ एक कहानी।
जिसमें खिलते सुन्दर फूल,
क्या होती है मिट्टी-धूल
इसे बनाने वाला कौन?
बोलो नानी तोड़ो मौन।
नानी धीरे से मुस्काई।
नन्ही को गोदी बैठाई।
बोली तुम्हें सुनाऊं मैं,
तुमको सब बतलाऊं मैं।
बात सोच होगी हैरानी।
पर ये चिड़िया बड़ी सयानी।
मुंह में दाना-दुनका लेकर,
जा बैठी पर्वत के ऊपर।
फिसल गया एक दाना मुंह से,
फसा रह गया चट्टानों से
इसी तरह से बीज अनेक,
चट्टानों की लेकर टेक
यहाँ वहाँ पर जगह बनाई,
'फूले बीज' जो वर्षा आई।
बीज दाब से दबे पहाड़,
जगह-जगह पड़ गई दरार।
पानी घुसा दरारों बीच,
ठंड आई वर्षा गई बीत।
ठंडक बढ़ी शीत-ऋतु आई,
पानी बना बर्फ अब भाई।
बर्फ जगह कुछ ज्यादा घेरे,
शामत आई पर्वत पर रे
बरसों-बरस बदलता मौसम
खण्ड हुआ पहाड़ समझे तुम
पत्थर टूटे बनती धूल,
जिसमें खिलते सुन्दर फूल।

● इन्दौर (म.प्र.)

रोचक जानकारी

दो आँखें क्यों?

अरविन्द कुमार जोशी

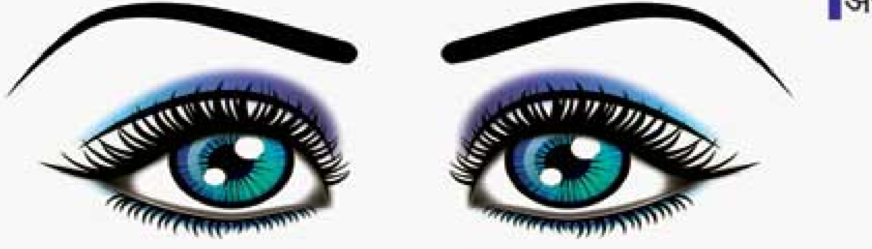

हम दो आँखों से जो-जो रंग-रूप, वस्तु, जीव और पेड़-पौधे देख सकते हैं, वे सब एक आँख से भी देख सकते हैं। तब प्रकृति ने हमें दो आँखें क्यों दी हैं? इसका एक उत्तर तो यह हो सकता है कि ज्यादातर आवश्यक अंग-कान, गुर्दे, फेफड़े, हाथ, पैर दो-दो इसलिए हैं कि एक के खराब होने पर भी दूसरा काम करता रहे। पर आँख के मामले में केवल यह अकेला उत्तर नहीं है।

दो आँखों से जो दिखता है वह वही नहीं है जो एक आँख से दिखता है। अंतर जानने के लिए एक प्रयोग करते हैं। अपने दोनों हाथ में एक-एक पेंसिल लो। एक हाथ में पेंसिल उलटी पकड़ लो। दोनों हाथ दूर-दूर फैला लो। अब हाथ पास-पास लाओ ताकि दोनों पेंसिलों की नोकें आमने-सामने (एक दूसरे के ऊपर) तो हों पर एक दूसरे को छुएँ नहीं।

फिर से हाथ दूर-दूर ले जाओ। अब एक आँख बंद कर लो और पहले की तरह ही दोनों हाथ पास में लाओ। जब लगे कि नोकें एक दूसरे के ऊपर आ गई हैं (नोकें एक दूसरे को छुएँ नहीं), तब रुक जाओ। अब आँख खोल दो। तुम्हें आश्चर्य होगा कि एक आँख से देखने से जो नोकें एक दूसरे के ठीक ऊपर लग रही थीं, दूसरी आँख खोलने पर दिखता है कि वे एक दूसरे के ठीक ऊपर नहीं हैं, बल्कि उनके बीच दूरी है।

इससे यह नतीजा निकलता है कि दो चीजों के बीच की असली दूरी हमें दो आँखों से ही पता चलती है, एक से नहीं, दूसरे शब्दों में, एक आँख लम्बाई-चौड़ाई (दो आयाम) की जानकारी देती है, गहराई (तीसरे आयाम) की जानकारी दूसरी आँख से मिलती है।

इसीलिए थ्री-डी (त्रि-आयामी) फिल्मों की शूटिंग एक नहीं, बल्कि एक साथ दो कैमरों से की जाती है, थ्री-डी फिल्म को परदे पर दिखाया भी दो प्रोजेक्टरों से जाता है। एक विशेष फिल्टर चश्मा पहनने से दायीं आँख को केवल दाएं कैमरे द्वारा और बायीं आँख को केवल बाएं कैमरे द्वारा खींचा दृश्य ही दिखता है। इस तरह आँखों को गहराई का आभास होता है।

अब एक सवाल तारे हमें ऐसे क्यों दिखाई देते हैं मानो एक ही परदे पर सब टंके हुए हैं? दो आँखों से देखने पर भी उनके बीच की गहराई का बोध हमें क्यों नहीं होता? इसका जवाब है- तारे धरती से इतनी दूर हैं कि हमारी दूसरी आँख तो तारों के बीच की गहराई का अंदाज लगाने में असमर्थ रहती है।

● इन्दौर (म.प्र.)

उद्यान की सैर

कहानी : डॉ. राकेश 'चक्र'

आज रविवार था। नित्य की भाँति विजय के पिताजी प्रातः चार बजे जग गए थे। जैसे ही उसके पिताजी जगे, वैसे ही विजय की भी आँख खुल गई। वह चेहरे पर मुस्कान लिये बोला, पिताजी नमस्ते! मैं भी आपके साथ उद्यान में घूमने चलूँगा।''

उसके पिताजी ने कहा– ''बेटा, नमस्ते! आप तो कितने अच्छे हो कि आज तो आप मेरे साथ जग गए। पहले मेरे साथ एक गिलास ताजा पानी पी लो, शौच जाओ, फिर घूमने चलना।''

विजय ने कहा–''हाँ, हाँ, पिताजी मुझे तो माता जी भी रोज एक गिलास पानी जागने के बाद देती हैं, तभी मैं शौच जाता हूँ और मैं अच्छी तरह निवृत्त (फ्रेश) हो जाता हूँ।''

निवृत्त होने के बाद विजय और उसके पिताजी उद्यान में घूमने के लिए निकले। वे दोनों पांच–सात मिनिट में ही उद्यान पहुँच गए।

विजय ने अपने पिताजी से कहा– ''पिताजी! यहाँ तो बहुत अच्छा लग रहा है। कितनी अच्छी हवा चल रही है। देखिए! बच्चे बड़े मजे से फुटबाल खेल रहे हैं। कितना मजा आता है फुटबाल खेलने में। मैं भी तो अपनी शाला में फुटबाल खेलता हूँ। खूब दौड़–भाग होती है फुटबाल में।''

उसके पिताजी ने प्यार से कहा– ''बेटा! तुम चाहो तो इन बच्चों के साथ फुटबाल खेल लो। मैं जब तक उद्यान में टहल लेता हूँ टहलने के बाद योगासन करूँगा, बाद में प्राणायाम।''

विजय बोला–''नहीं! पिताजी आज तो मैं आपके साथ–साथ टहलूँगा। योगासन और प्राणायाम भी सीखूँगा। मैं भी आपकी तरह शक्तिशाली बनूँगा।''

जैसे ही विजय अपने पिताजी के साथ टहलते-टहलते आगे बढ़ा तब उसने देखा कि कुछ बच्चे झूला झूलकर पैंगें बढ़ा रहे हैं। दो बच्चे बिना जाल (नेट) बाँधे ही पार्क की घास में बैडमिंटन खेल रहे हैं। पेड़ों पर दो चार बन्दर धमा चौकड़ी मचा रहे हैं। कुछ कौए बंदरों में चोंचें मार-मारकर काँव-काँव कर उड़ रहे हैं।

विजय ने जिज्ञासावश अपने पिताजी से पूछा- ''पिताजी! ये कौए बन्दरों को चोंच क्यों मार रहे है?''

विजय के पिताजी बोले- ''बेटा! इस पीपल के पेड़ पर कौओं का घोंसला है, इसलिए वे बन्दरों को भगा रहे हैं। घौंसले में बच्चे सेहने के लिए अण्डे रखे होंगे। इसलिए वे अपने अण्डों की सुरक्षा करने के लिए बन्दरों को पीपल के पेड़ से भगा रहे हैं।''

विजय बोला- ''पिताजी थोड़ा रुक जाइए। देखते हैं कि कौए बन्दरों को भगा पाते हैं या नहीं।''

''हाँ! हाँ! बेटा देख लो।''

एक दो मिनट ही गुजरे होंगे कि काँव-काँव कर कौओं ने उन पर हमला इतनी तेज कर दिया कि सारे बन्दर पीपल के पेड़ से दूसरे पेड़ों की तरफ उछल-कूद कर भागने लगे।

''अरे! पिताजी बन्दर तो डर गए। इसलिए वे दूसरे पेड़ों पर चले गए।''

''हाँ! हाँ! बेटा, ये बन्दर बड़े डरपोक होते हैं। पहले सबको डराते हैं जब कोई डरता नहीं है तब वह भाग जाते हैं। तभी तो लोग उदाहरण देते हैं कि बन्दर जैसी घुड़की देता है...मैं तेरी घुड़की से डरने वाला नहीं हूँ...।''

उद्यान के बने पक्के पथ पर विजय तथा उसके पिताजी ने पांच चक्कर लगा लिए। उद्यान की गोलाई लगभग आधा किलोमीटर होगी। विजय को टहलने में खूब मजा आया।

उसके पिताजी उद्यान की हरी घास में बैठकर योगासन करने लगे। उन्होंने कई तरह के आसन हलासन, पवनमुक्तासन, चक्रासन, सूर्य नमस्कार आदि कर बाद में श्वासन किया। विजय भी अपने पिताजी से सीखकर आसन करने का प्रयास करता रहा। उसे बहुत अच्छा लग रहा था। उसके पिताजी ने बताया कि योगासन करने में हमारा शरीर शक्तिशाली होता ही है साथ ही शरीर के रोग भी स्वतः समाप्त होते रहते हैं। सबसे बाद में श्वसन करने से सारा तनाव दूर होकर मन को बहुत शांति मिलती है। फिर उन्होंने प्राणायाम किया, जिसमें अनुलोम, विलोम, कपालभाति आदि प्राणायाम प्रमुख थे।

विजय को भी प्राणायाम के लाभ बतलाए कि प्राणायाम करने से तन-मन स्वच्छ होकर सब रोग मिट जाते हैं तथा सकारात्मक सोच बनती है और आयु भी बढ़ती है।

आज विजय अपने आपको तरोताजा महसूस कर उल्लासित और हर्षित हो रहा था।

वह अपने पिताजी से बोला- ''पिताजी! मुझे छुट्टी वाले दिन अपने साथ जरूर लाया करना। मुझे तो आज बड़ा आनन्द आया।

उद्यान में उसकी कक्षा में पढ़ने वाली सौम्या भी मिल गई, जो अपने माता-पिता के साथ घूमने आई थी। विजय उसके माता-पिता को अभिवादन कर उससे बोला-''अरे! कैसी हो सौम्या? क्या तुम उद्यान में रोज घूमने आती हो?''

सौम्या ने विजय के पिताजी को अभिवादन कर कहा- हाँ! हाँ! विजय मैं तो अपने माता पिता के साथ रोज घूमने आती हूँ। कभी-कभी तो मैं अकेली भी उद्यान में आ जाती हूँ। मैं अपने मित्रों के साथ-साथ बहुत सारे खेल खेलती हूँ, बहुत मजा आता है उद्यान में खेलने में। मेरा घर तो उद्यान के पास में ही है।''

सौम्या! अब मैं भी अपने पिताजी के साथ रोज आया करूँगा। मुझे भी उद्यान में खूब मजा आया। मैं पिताजी के साथ-साथ टहला। मैंने तो आज पिताजी के साथ योगासन और प्राणायाम भी किए।''

''मेरे माता-पिता भी तो रोज ही टहलने के साथ-साथ योगासन और प्राणायाम करते हैं, मुझे तो बहुत सारे योगासन आते हैं और प्राणायाम भी कर लेती हूँ। ये सब करने के बाद मुझे बहुत अच्छा लगता है। मुझे कोई विषय रटना नहीं पड़ता है, एक बार ही पढ़ने पर सब याद हो जाता है।''

''मुझे तो पता ही नहीं था कि हमारे अंक कक्षा में सबसे ज्यादा क्यों आते हैं? आज असली बात पता चली। जब तो मैं भी पिताजी के साथ रोज ही उद्यान में आया करूँगा। तुम मुझे रोज मिला करना।''

''हाँ! हाँ! हम तुम्हें भी अपने मित्रों के साथ खेल खिलाया करेंगे।''

आज तो विजय की खुशी का ठिकाना ही नहीं था। वह सौम्या से विदा लेकर अपने पिताजी के साथ आ रहा था कि एक सफाईकर्मी सड़क के किनारे जगह-जगह एकत्रित किए गए कूड़े के ढेरों में आग लगा रहा था। चारों और वातावरण में धुआँ फैल गया था। उसने अपने पिताजी से कहा- ''पिताजी ये काका कूड़े को क्यों जला रहे हैं? इसमें तो पोलिथीन की पन्नियाँ भी हैं। मेरे आचार्य जी कहते हैं, इनको जलाने से कार्बनमोनो ऑक्साइड तथा अन्य विषैली गैसें निकलती हैं। जो श्वास लेने पर बीमारियाँ फैलाती है। कृपया पिताजी आप काका से मना कर दीजिए। ये तो तेज-तेज खाँस रहे हैं।

''हाँ! हाँ! बेटा आओ। मैं इन्हें समझाने का प्रयास करता हूँ।''

विजय और उसके पिताजी उस सफाईकर्मी के पास आए तथा उससे मीठी-मीठी बातें कर अपनापन दर्शाया। वह आग लगाना छोड़कर बीड़ी पीता हुआ उनसे बातचीत करने लगा। तब उन्होंने समझाया कि कूड़े में आग लगाने से बीमारियाँ फैलती हैं। हवा गंदी होती है।

वह समझा ही रहे थे कि कि खाँस-खाँसकर हाँफने लगा।

उन्होंने समझाते हुए फिर कहा- ''भैया! आपको तो खाँसी हो रही है, वह बीड़ी पीने से तथा धुएँ में श्वास लेने के कारण ही हो रही है। आपसे मैं उम्र में बड़ा हूँ। मेरी बात मान लो, आज से ही बीड़ी पीना तथा कूड़े में आग लगाना बंद कर दो। आप ऐसा करने से अपना तो भला करोगे ही, साथ ही हवा भी गंदी (प्रदूषित) नहीं होगी। क्या मैं आपका नाम जान सकता हूँ?''

हाथ से बीड़ी फेंकते हुए वह खाँसते-खाँसते अपना नाम बताने लगा- ''भाई साहब! मेरौ नाम सुरेश है। तुमने तो आज ऐसी बातें बताई हैं जो पहलै काऊ आदमी ने नाय बताई। मैं आज सै ही बीड़ी पीनौ और कूड़े में आग लगानौ बंद कर दूँगो...मेरी आँख तुमनै खोल दई....।''

वह जल रहे कूड़े के ढेरों को तत्परता से बुझाने लगा। यह सब देखकर विजय और उसके पिताजी को बहुत अच्छा लगा। वह उसे धन्यवाद देकर अपने घर की ओर उल्लसित मन लिए चल दिए।

• मुरादाबाद (उ.प्र.)

आ गईं सर्दियां

कहानी : राजनारायण चौधरी

आ गई चुपके हठीली सर्दियाँ।
रौब कैसा जमाती-सी
सुई तन में गड़ाती-सी
कर रही हैं गजब की शैतानियाँ।
सभी को कैसा नचाया
वस्त्र सूती उतरवाया
छा गईं हर ओर ऊनी वर्दियाँ।
सूर्य का है हाल कैसा।
दिख रहा कंगाल जैसा
धूप पर है लग गईं पाबंदियाँ।
बर्फ सा पानी हुआ है
जम गया झरना कुँआ है
आफतों में पड़ गई हैं बस्तियाँ।

• हाजीपुर (बिहार)

भवानी का वरदान

अपनी हवेली में, सभासदों से घिरे, जाधवराव एक ऊँचे आसन पर विराजमान थे। दरबारियों में उनके विशेष कृपापात्र मालो जी भोंसले और बिठो जी भोंसले भी उपस्थित थे। कुछ हटकर मालोजी का सुदर्शन सलोना पुत्र शाहजी भी खड़ा था।

न जाने क्यों जाधवराज को बालक पर बड़ा प्यार आ गया और उन्होंने उसे बुलाकर अपनी गोद में बैठा लिया। तभी जाधवराव की समवयस्का पुत्री भी भागते हुए आई और उनकी गोद में बालक के बराबर आ बैठी।

जाधवराव ने पुत्री से हंस कर पूछा- ''जीजाबाई, तेरी शादी इस लड़के से कर दूं?

लड़की ने स्वीकृति में सिर हिला दिया।

जाधवराव ने दरबारियों की तरफ ऐसे नजर घुमाई, जैसे अपने प्रस्ताव की स्वीकृति चाह रहे हों।

मालो जी बिठोजी ने अपने को बहुत सम्मानित अनुभव किया और इस प्रस्ताव के पीछे जो सदाशयता उन्हें लगी, उसे प्रत्युत्तर में दोनों ने जाधवराव को जुहारी की।

कुछ देर के बाद बात रनिवास में पहुँची तो जाधवराव की पत्नी अड़ गयीं कि वे अपनी पुत्री का विवाह अपने से हीन जाति में नहीं करेंगी। जाधवराव ने उन्हें समझाने की कोशिश की मगर वे नहीं मानी।

जाधवराव इस परिहास की बात को इतना तूल पकड़ते देखकर मालो जी और बिठो जी से अप्रसन्न हो गए और दोनों को सेवा मुक्त कर दिया। दोनों बेचारे अपने गांव बेसल में लौट आए और फिर से खेती बाडी में लग गए।

दिनभर खेत में परिश्रम करते, ध्यान बंटा रहता, किन्तु रात को उन्हें यह अपमान कचोटा करता। खेत जोते गए, बोये गए, फसल बढ़ने लगी और धीरे-धीरे माघ का महीना आ गया।

फसल को रात में जंगली पशुओं से बड़ा खतरा था सो दोनों भाई लाठियां लेकर खेत पर चक्कर लगाने चल दिए।

राजपूत जब राजस्थान छोड़कर महाराष्ट्र में आए तो अपनी कुलदेवी भवानी की पूजा की परम्परा भी उनके साथ आ गई। शोलापुर से २० मील दूर तुलजा भवानी का मंदिर आज महाराष्ट्र में ही नहीं सारे देश में प्रसिद्ध है।

दोनों भाई चले जा रहे थे। चांदनी रात थी कि मालोजी ने अचानक देखा कि सामने खड़ी भवानी उसे बुला रही हैं।

श्वेत साड़ी, आभूषण, हाथ में त्रिशूल देखकर मालो जी पहले तो डरे मगर फिर उनके पास पहुंच कर चरणों में गिर पड़े।

भवानी ने आश्वस्ति के हाथ उठाकर मालोजी को अभय दिया और बोली– ''तेरा पुत्र महाशक्तिवान और प्रतापी होगा। वह एक साम्राज्य स्थापित करेगा और उसकी २७ पीढ़ियाँ राज्य करेंगी।''

महाराष्ट्र में यह कथा घर–घर जानी जाती है।

भवानी ने आगे कहा– ''देखो तुम्हारे खेत के पास चीटियों का एक आवाँ है। उसे खोदना। उसकी रक्षा एक सर्प करता है। खोदने पर तुम्हें अपार धनराशि मिलेगी।''

अगले दिन मालोजी ने बिठोजी को रात की बात बताई। पहले तो बिठोजी ने विश्वास नहीं किया फिर भाई के कहने पर दोनों ने उस आवाँ के पास जाकर खोदा तो सचमुच अशर्फियों से भरा एक घड़ा उन्हें मिला।

भवानी का एक वरदान तो पूरा उतरा और दूसरा भी, मगर उसका समय बाद में आया जब मालोजी के पुत्र शाहजी से सचमुच जाधवराव की पुत्री जीजाबाई का विवाह हो गया।

(अगले अंक में निरंतर...)

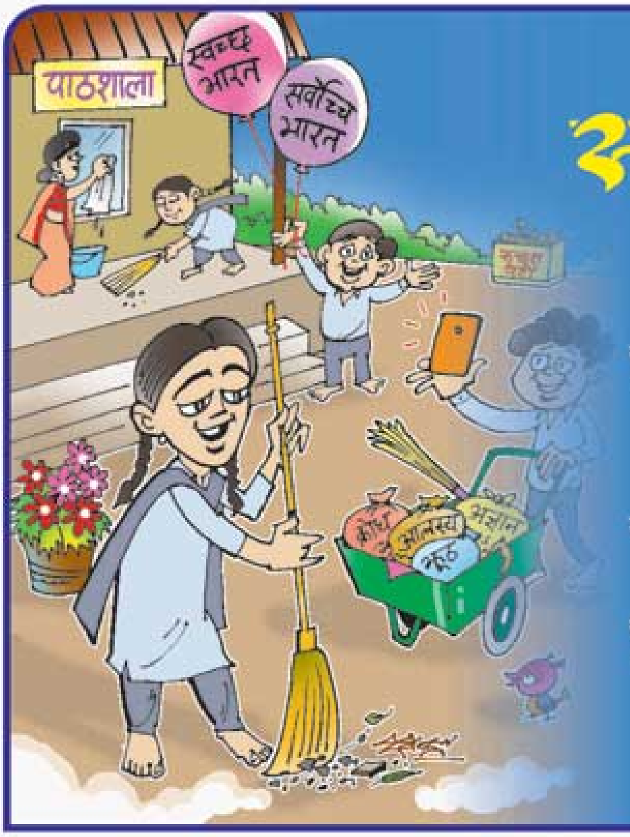

स्वच्छ भारत

दीपा श्रीवास्तव

शहर गली में चर्चा है,
स्वच्छ भारत अभियान की!
आओ बच्चो तुम्हें बताएं,
महत्ता कचरा दान की।
बिना प्रबंधन बीमारी,
फैले जो दुश्मन जान की!
उचित प्रबंधन खाद बनाता,
करता मदद किसान की!
शहर गली में चर्चा है
स्वच्छ भारत अभियान की!
कपड़े की झोली विकल्प है
पॉलीथीन की थैली की
लहर चल रही सभी ओर अब
मोदी के अभियान की!
शहर गली में चर्चा है
स्वच्छ भारत अभियान की।
शौचालय के लाभ समझना
जरूरत हर इंसान की
तुम्हारे कंधों पर निर्भर है
सफलता इस अभियान की!
शहर गली में चर्चा है
स्वच्छ भारत अभियान की!

• इन्दौर (म.प्र.)

छोटी से बड़ी

बसंत पंचमी पर कुछ बच्चे वनवासी बंधुओं से मिलने वन यात्रा पर गए, वहाँ उनकी कई झोपड़ियाँ बनी थीं, बताइए कौनसी झोपड़ी है किससे बड़ी

(उत्तर इसी अंक में।)

कोयल

कविता : राजीव त्रिपाठी

कोयल रानी आती है
मीठा गीत सुनाती है
बैठ वृक्ष की डाली पर
मधुर मधुर मुस्काती है

● अमरपाटन (म.प्र.)

॥ बाल प्रस्तुति ॥

फूल

कविता : सुनिल भार्गव

फूल खिले भई फूल खिले
रंग बिरंगे फूल खिले॥
देखो देखो फूल खिले।
अच्छे-अच्छे फूल खिले॥

● नोखा (राज.)

समाचार

पहला अटल सम्मान शैवाल सत्यार्थी को

अपना ग्वालियर की ओर से प्रारम्भ **हमारे अटलः प्यारे अटल** के अन्तर्गत 'पहला अटल सम्मान २०१५' विख्यात साहित्यकार एवं अटल जी के परम स्नेही शैवाल सत्यार्थी को प्रदान किया गया।

ग्वालियर के राजमाता विजयाराजे सिंधिया सभागार में आयोजित भव्य समारोह में केन्द्रीय मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर तथा प्रदेश मंत्री माया सिंह ने शॉल, अभिनन्दन पत्र सहित इक्कीस हजार रुपए की सम्मान राशि उन्हें भेंट की।

साहित्य तथा राजनीति जगत के प्रमुख हस्ताक्षर इन अंतरंग एवं आत्मीय क्षणों के साक्षी बने।

बाल साहित्यकार श्री सेठिया सम्मानित

कानपुर। १६ दिसम्बर को श्रीमंत माधवराव सिंधिया स्मारक समिति, कानपुर के १५वें सम्मान समारोह में ९ अन्य विशिष्टजनों के साथ बाल साहित्यकार श्री भालचन्द्र सेठिया सम्मानित हुए। अध्यक्ष श्री आर. एन. त्रिवेदी (आई.ए.एस.) व मुख्य अतिथि श्री अजय कपूर (विधायक) रहे। संचालन भारतीय बाल कल्याण संस्थान के महामंत्री श्री एस. बी. शर्मा ने किया।

दिमागी कसरत

राशियों से जुड़े इन चिह्नों को क्या आप पहचानते हैं ?

1.

2.

3.

रिक्त खानों में '+', '-' व '×' के साथ ऐसी संख्याएं भरिये ताकि गणना करने पर प्रत्येक पंक्ति में '=' के बाद वाली संख्या प्राप्त हो सके।

6	−	4	×	2	+	3	=	7
							=	8
							=	18
							=	20
=		=		=		=		
12		8		13		40		

उलझन

साथ के चित्र में दर्शाये गये वृत्त मान लीजिए एक शहर की सड़कें हैं और इन पर बने बिन्दु दूध के डिपो। आपको बताना है कि दूध से भरी गाड़ी तीर के निशान से चलकर इन रास्तों पर किस तरह गुज़रे ताकि कोई डिपो बिना दूध के भी न रहे और डीज़ल की बचत का ध्यान रखते हुए गाड़ी दुबारा किसी डिपो के सामने से भी न गुज़रे। है कोई रास्ता ?

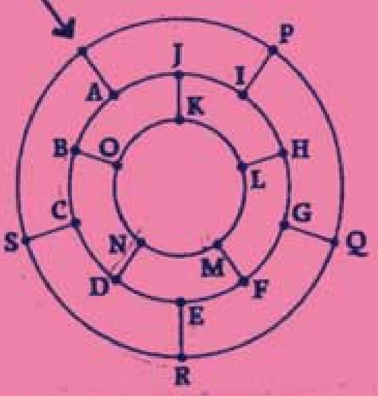

आइवर यूशिएल

(उत्तर इसी अंक में)

सांच को आंच नहीं

कहानी : आर. के. वसिष्ठ

राहुल बहुत खुश था। उसने समय पर अपना गृहकार्य समाप्त कर लिया था। बल्कि दोहरा भी लिया था। कक्षा में उसकी श्रेणी काफी अच्छी थी और उसके सभी अध्यापक उसे प्यार करते थे। राहुल का घर विद्यालय से लगभग एक किलोमीटर था। उसके बाकि सभी मित्र साईकलों पर विद्यालय आते थे। ऐसा नहीं था कि वह साईकिल नहीं खरीद सकता था पर उसे सुबह पैदल चलने में मजा आता था। रास्ते में जब बुजुर्ग मिलते, वह उनका अभिवादन करना नहीं भूलता और वे हमेशा उसे आशीर्वाद देते।

वह तेज–तेज कदमों से विद्यालय की ओर बढ़ रहा था। तभी एक साईकिल तेजी से निकल गई। उस पर सवार थे उसके सहपाठी विनोद और मनोज। वे उसे चिढा कर गए थे। पर राहुल को कुछ ठीक से सुनाई नहीं दिया। वैसे भी वो बेकार की बहस से दूर ही रहा करता था।

दोनों विनोद और मनोज कक्षा में सबसे पीछे बैठते थे। वे विद्यालय में अपनी शरारतों के लिए जाने जाते थे। श्यामपट पर चाक फेंकना, डेस्कों पर नाम लिखना और आते–जाते अपने सहपाठियों को धक्के मारने में उन्हें कुछ ज्यादा ही आनंद आता था। ऐसा भी नहीं कि इस के लिए उन्हें मार नहीं पड़ी थी पर वो सुधरने का नाम ही नहीं लेते थे। विद्यालय से कई बार उनकी शिकायतें उनके घर तक पहुँच गई थीं पर कोई फायदा नहीं हुआ था।

राहुल कक्षा में सब से आगे की पंक्ति में बैठता था। पर आज जैसे ही वो कक्षा में पहुंचा तो वहाँ विनोद बैठा था। राहुल की साथ वाली बेंच पर मनोज बैठा था। राहुल ने पूछा– ''तुम मेरी जगह पर क्यों बैठे हो?'' विनोद बोला– ''इस पर क्या तुम्हारा नाम लिखा है? क्या हम शुल्क नहीं देते?'' राहुल ने उलझना ठीक नहीं समझा और वो चुपचाप पीछे चला गया।

हिन्दी विषय के अध्यापक आए। उन्होंने भी हैरान होकर विनोद और मनोज को देखा और फिर मुस्करा कर उपस्थिति लेने लगे। फिर उन्होंने अभ्यास पुस्तिकाएं जांचनी शुरु की। विद्यार्थी बारी–बारी आगे आने लगे। विनोद की बारी आई।

मास्टर जी ने उसका काम देखा और कहा– ''ये काम तुमने स्वयं किया है?''

''जी, मास्टर जी!'' विनोद ने आत्मविश्वास से कहा।

''अगर कहीं से नकल किया है तो बता दो विनोद!''

''नहीं, मास्टर जी!, मैं भला क्यों नकल करने लगा?''

मास्टर जी ने उसे बिठा दिया और अगले छात्र की कॉपी जांचने लगे। मनोज ने आधा ही काम किया था। राहुल की बारी काफी देर बाद आई क्योंकि आज उसकी सीट पीछे जो थी। राहुल ने भी अपनी कॉपी आगे बढ़ाई। उसका काम देखकर मास्टर जी हैरान रह गए। उन्हें लगा जैसे किसी और छात्र ने भी ऐसा ही काम दिखाया था। दिमाग पर जोर डालने पर उन्हें याद आने लगा। शायद विनोद ने दिखाया था।

मास्टर जी ने राहूल ने पूछा–''तुमने अपनी कॉपी विनोद को दी

थी?''

''नहीं, मास्टर जी! पर आप ऐसा क्यों पूछ रहे हैं? मेरी तो उस से बात तक नहीं होती।''

''वह तो मुझे पता है। पर उसका आज का काम बिल्कुल तुम्हारे काम जैसा है। ऐसा संभव नहीं कि दो छात्र एक जैसा लिखें।''

मास्टर जी ने विनोद को अपनी कॉपी दुबारा दिखाने को कहा। उन्होंने दोनों कापियाँ राहुल को दिखाईं। राहुल तो हैरान ही रह गया।

फिर उन्होंने विनोद को पूछा–''विनोद! तुम ने राहुल की कॉपी से लिखा?''

वह दृढ़ता से बोला– ''मैं क्यों ऐसा करने लगा मास्टर जी? आपने देखा मैं आज कहाँ बैठा था? मैंने बड़ी मेहनत से पूरा काम किया है।''

''फिर ऐसा कैसे हो गया कि तुम दोनों का एक–एक शब्द समान है?''

''मुझे नहीं पता मास्टर जी! मैंने तो खुद किया है।''

मास्टर जी जानते थे कि विनोद झूठ बोल रहा है। पर सबूत के बिना वो उसे दण्ड नहीं दे सकते थे। वो सोचने लगे।

तभी उन की आँखें चमक उठीं। दोनों कापियां बंद कर बोले–''विनोद! जो तुमने लिखा है क्या जुबानी सुना सकते हो?''

विनोद ने ऐसी कल्पना भी नहीं की थी कि उससे जुबानी भी पूछा जा सकता है। वह बोला–''मास्टर जी! मैंने सिर्फ लिखा था। याद नहीं

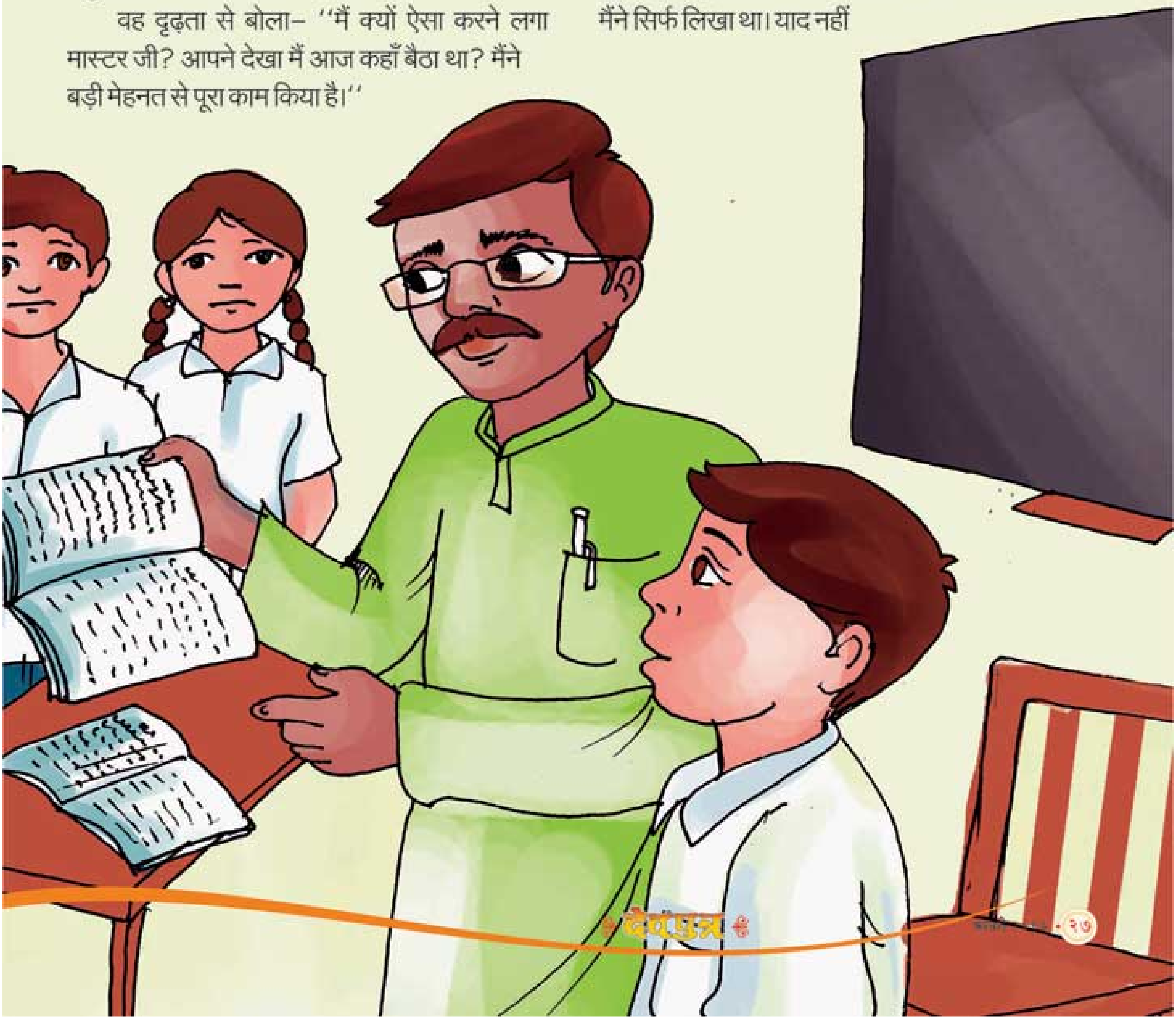

किया था। और आपने याद करने का कहा भी नहीं था।''

''पर कुछ तो याद रहा ही होगा। जब हम कुछ लिखते हैं, तो अपने आप थोड़ा बहुत तो याद हो ही जाता है।''

पर वह कुछ नहीं सुना सका। तब मास्टर जी ने राहुल से कहा–''राहुल! क्या तुम सुना सकते हो?''

''जी, मास्टर जी!''

''तो सुनाओ।''

राहुल ने तुरंत सुना दिया। जैसे ही उन्होंने विनोद की तरफ देखा तो उस ने सर झुका लिया। फिर अध्यापक ने राहुल से पूछा–''तो यह तो साबित हो गया कि आप ने तुमने काम खुद किया था। पर तुमने यह क्यों नहीं बताया कि आपने अपनी कॉपी विनोद को दे थी?''

''मैंने नहीं दी, मास्टर जी,'' राहुल बोला।

थोड़ी देर सोचने के बाद मास्टर जी बोले– ''विनोद, मैं सब सच सुनना चाहता हूँ। अगर दंड से बचना है तो जल्दी बताओ। मैं चाहता हूँ कि तुम सच बताओ। कक्षा का काफी समय पहले ही बर्बाद हो चुका है।''

विनोद बोला– ''मुझे माफ कर दीजिए मास्टर जी। मैं स्वयं को बहुत चालक समझता था। पर आपने मेरी चोरी पकड़ ली। मैं कल राहुल के घर गया था। जब मैं इसके घर पहुँचा तो ये घर पर नहीं था। इसका छोटा भाई था। उसने मुझे इस के कमरे में बैठा दिया। सामने इसकी कॉपी पड़ी थी। मैंने एक रफ कागज लिया और फटाफट सारा काम उतार लिया।

''इस के आने के पहले मैं इस के घर से चला गया। घर आकर मैंने पूरा काम दूसरी कॉपी में उतारा। फिर मैंने सोचा कि अगर आपने राहुल की कॉपी पहले जाँच ली तो मेरा काम देखते ही आपको पता चल जाएगा क्योंकि मैं हमेशा पीछे जो बैठता था। इसलिए मैं जल्दी विद्यालय आ गया ताकि आगे बैठ सकूँ और आप मेरी कापी पहले जाँच लें।''

मास्टर जी बोले–''वाह! क्या योजना बनाई थी तुमने। इतना दिमाग अगर पढ़ने में लगाते तो अच्छा रहता न? और एक बात सुन लो। सिर्फ आगे बैठने से कोई होशियार नहीं बन जाता। मेहनत करनी पड़ती है जैसे राहुल करता है और एक अध्यापक को अपने छात्रों के बारे में सब पता होता है। कोई भी छात्र अपने अध्यापक को धोखा नहीं दे सकता। और वो कहावत तो सुनी ही होगी ना की सांच को आंच नहीं? ''

विनोद बोला–''मैं शर्मिन्दा हूँ। मैं अब आपको एक अच्छा छात्र बनकर दिखाऊंगा मास्टर जी! आपको कोई शिकायत का मौका नहीं दूंगा। और राहुल, मैं आपसे भी माफी मांगता हूँ।''

तभी मास्टर जी ने मनोज की तरफ देखा–''मनोज, तुम्हारे क्या इरादे हैं?''

''मैं भी अच्छा छात्र बनना चाहता हूँ मास्टर जी!'' वह बोला।

मास्टर जी मुस्कराए और सारी कक्षा में तालियाँ गूँज पड़ीं।

सही उत्तर

दिमागी कसरत

(१) मकर, धनु, कर्क

(२)

6	−	4	×	2	+	3	=	7
+		−		×		+		
2	×	3	+	6	−	4	=	8
−		×		−		×		
4	+	2	−	3	×	6	=	18
×		+		+		−		
3	×	6	+	4	−	2	=	20
=		=		=		=		
12		8		13		40		

(३) PIHLMNDEFGQRSCBOKJA

नोट बंदी

चित्रकथा - देवांशु वत्स

खतरे की घंटी

कहानी : भगवती प्रसाद द्विवेदी

सीपू अपने माता–पिता से जिद कर रहा था सेल्युलर फोन खरीदवाने की। मगर माता–पिता की वैसी परिस्थिति कहाँ!

पिताजी ने समझाने की कोशिश की–''बेटे! तुम्हें मोबाइल की क्या जरुरत! तुमने तो पढ़ाई भी बीच में ही छोड़ दी। तुमको फिर से पढ़ाई शुरु करनी चाहिए। उसी की जरूरत है तुम्हें। मोबाईल की नहीं।''

पिताजी ! आप समझते क्यों नहीं!'' सीपू तुनक कर बोला– ''मेरे सभी साथियों के पास मोबाइल है। केवल एक मैं ही हूँ, जो...''

''मगर मोबाइल खिलौना नहीं है, बेटे! यही समझो कि खतरे की घंटी हैं यह''–पिताजी ने कहा।

''वह कैसे ? आप यों ही डरा रहे हैं मुझे। यह क्यों नहीं कहते कि मेरे लिए आप इतना पैसा भी खर्च करना नहीं चाहते।'' सीपू ने गुस्सा कर कहा।

''क्रोध करना अच्छी बात नहीं है सीपू। यह सच है कि मेरे पास व्यर्थ की चीजों पर खर्च करने के लिए पैसे नहीं हैं। मगर मैं तुमको मोबाइल से होने वाले खतरे से आगाह करना चाहता हूँ। सड़क पर गाड़ी चलाने वाले का ध्यान यातायात और आने जाने वाले वाहनों पर होता है। इसी दौरान अचानक मोबाइल की घंटी बजती है। तब जानते हो, क्या होता है? अचानक दिमाग उधर केन्द्रित हो जाता है। ऐसी हालत में दुर्घटना होना संभव है।''

सीपू पिता को उत्तर देने ही जा रहा था। तभी वहाँ एकाएक मोबाइल मामा को खड़ा देखकर चुप ही रहा। मामा हाथ में हरदम मोबाइल रखते थे। इसलिए बच्चों के बीच में वे मोबाईल मामा के नाम से प्रसिद्ध हो गए थे।

''क्या बात हो रही थी बेटे ?'' मामा ने सीपू के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा।

सीपू को मिला, डूबते को तिनके का सहारा। मामा जरूर उसकी तरफदारी करेंगे। उसने तपाक से कहा– ''देखिए न मामा! मैं पिताजी से अपने लिए मोबाइल खरीदवाने को कह रहा था मगर ये हैं कि....''

''मोबाइल! नहीं सीपू, हरगिज नहीं! मोबाइल मामा ने दो टूक शब्दों में जवाब दिया–''मोबाइल खरीदने की बात भूलकर भी मत करना।''

सीपू ने तुनककर कहा– ''मामा! आप खुद तो मोबाइल रखते हैं। मुझे इसे न रखने की सीख दे रहे हैं पर उपदेश कुशल बहुतेरे।''

''नहीं बेटे। मैं उपदेश नहीं दे रहा हूँ। लम्बे समय से मैं अब मोबाइल छूता तक नहीं। जानते हो क्यों?'' मामा ने पूछा।

''वह क्यों भला?'' सीपू ने आश्चर्य से प्रश्न किया।

मोबाइल मामा ने असलियत बताई– ''तुम्हें मालूम है न? मुझे दिल का दौरा पड़ा था। डाक्टर ने बताया कि मोबाइल के कारण ही ऐसा हुआ है। मैं कुरते की बाईं जेब में मोबाइल रखा करता था। हमारा दिल भी यहीं होता है। डाक्टर की बात बता रहा हूँ। मोबाइल की घंटी बजते ही उससे विद्युत चुंबकीय तरंगें प्रवाहित होने लगती हैं। हृदय से सटे होने के कारण उन तरंगों ने दिल पर बुरा प्रभाव डाला। नतीजा यह हुआ कि मैं दिल का मरीज हो गया।''

''लेकिन मोबाइल को अगर पैंट की जेब में रखा जाए, तब तो यह खतरा नहीं होगा न?'' सीपू ने तर्क दिया।

''इससे केवल एक खतरा हो, तो बताऊँ! यह तो कई बीमारियों की जड़ हैं।'' मोबाइल मामा ने कहा।

''बीमारियों की जड़? वह कैसे भला?'' सीपू ने प्रश्न किया–''अगर ऐसी बात होती तो सरकार और सेल्युलर कंपनियाँ इसका इतना प्रचार क्यों करती?''

''यह तो खरीदने वाले के विवेक पर निर्भर करता है, बेटे! कंपनियां तो अपन माल बेचेंगी ही'' मामा ने फिर समझाया–''वैसे सेल्युलर कंपनियाँ भी वैज्ञानिकों से शोध करवा रही हैं। इस खुलासे के लिए कि मोबाइल फोन कितना फायदेमंद है और कितना नुकसानदेह। शोध से जानते हो, क्या पता चला है? लगातार मोबाइल पर बात करने वाला जवान आदमी भी एकाएक बूढ़ा दिखने लगता है। यह शोध है प्रोफेसर लीफ सैलफोर्ड का। वे स्वीडन के लुंद विश्वविद्यालय की शोध टीम के मुखिया हैं।''

''मगर यह कैसे संभव है, मामा?'' सीपू ने अचरज से फिर पूछा।

''यह सच्चाई हैं, बेटे! मोबाइल मामा ने फिर समझाया–''होता यह है कि कानों से सटाकर मोबाइल से बात करते ही दिमाग पर सूक्ष्म तरंग किरणों की बारिश सी होने लगती है। मनुष्य के खून में एक प्रोटीन पाया जाता है, जिसका नाम है 'एल्बूमिन'। इस एल्बूमिन का प्रवेश अगर मस्तिष्क में होने लगे, तो किसी भी उम्र में व्यक्ति को बूढ़ा बनने से नहीं रोका जा सकता। बचपन और जवानी में दिमाग किसी भी कीमत पर एल्बूमिन को अपनी कोशिकाओं में दाखिल नहीं होने देता। मगर मोबाइल प्रयोग करने वाले आदमी के दिमाग पर सूक्ष्म तरंगों की इतनी अधिक बरसात होती है कि दिमागी ताकत कम होती चली जाती है। परिणाम यह होता है कि मस्तिष्क की कोशिकाओं में एल्बूमिन प्रवाहित होने लगता है। फिर तो बच्चे और जवान भी सठियाने से नहीं बच पाते।''

''पिताजी!'' सीपू कुछ सोचते हुए पिताजी से बोला– ''तब तो आपने ठीक ही कहा था। सचमुच खतरे की घंटी है यह कमबख्त मोबाइल।''

मोबाइल मामा और पिताजी के होठों पर विजयी मुस्कान थिरक रही थी।

• मीठापुर (बिहार)

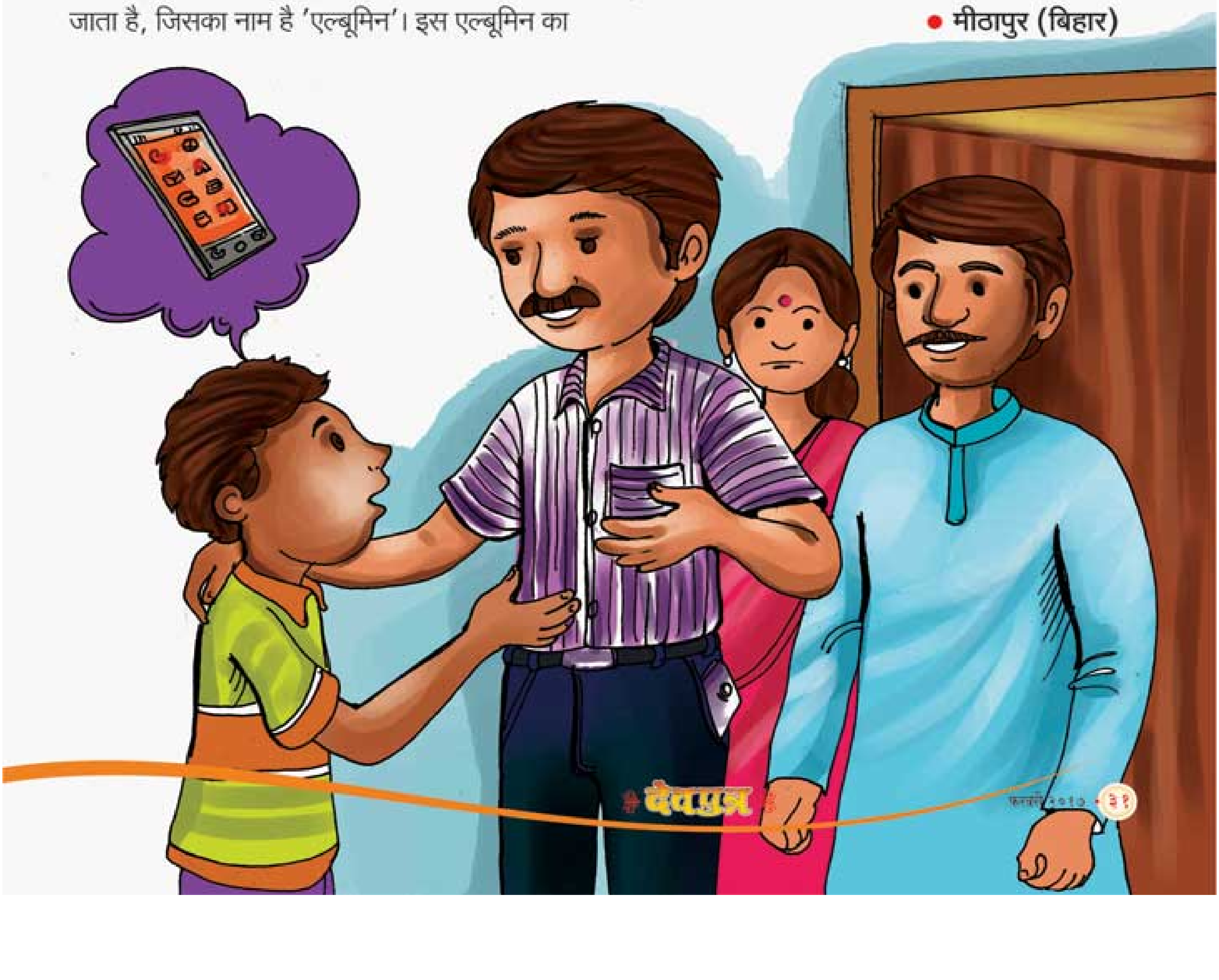

अक्कड़ बक्कड़ बम्बे बो
सो जा कन्नू अब ना रो।
देऊंगी री ऐसी गुड़िया, घूंघर वाले बाल हो
देख देखकर कुन्नू मेरा, नाचे दे दे ताल हो।
चन्दामामा नीचे आओ
तारे लाओ पूरे सौ।।

निंदियाँ रानी चादर ला, कुन्नू को होले औढ़ा।
सपनों की बगियों में जा, लाएगा मुन्ना घोड़ा।
रास जो खींचे मुन्ना तो
घोड़ा दौड़े अंगुल नौ।।

नहीं हठीला कुन्नू मेरा , कहना सबका मानता।
पहले पहले राजा, देखे कौन है आखें मूंदता।
सो जा बेटा एक दो.....।
अस्सी नब्बे पूरे सौ।
अक्कड बक्कड़ बम्बे बो
सो जा कन्नू अब ना रो।

• ब्यावर (राज.)

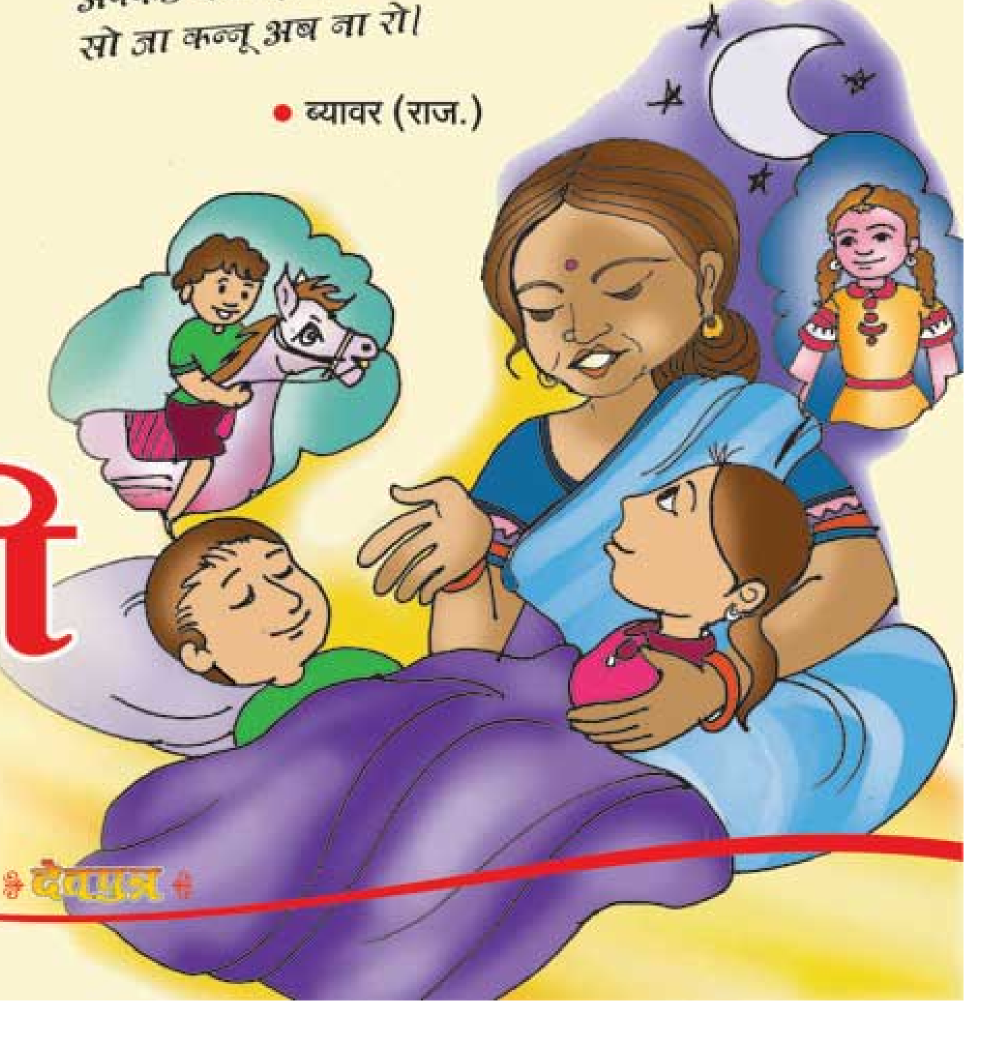

लोरी

कविता : सुरेन्द्र अंचल

राज्य नृत्य लिखो

राजेश गुजर

बच्चों, हमारे देश में विभिन्न नृत्य होते हैं, यहाँ १२ राज्यों के नक्शे बने हैं इसमें आपको प्रमुख राज्य नृत्यों के नाम इनमें बने गोलों में लिखना है। जरा दिमाग पर जोर डालिए और इसे पूरा कीजिए।

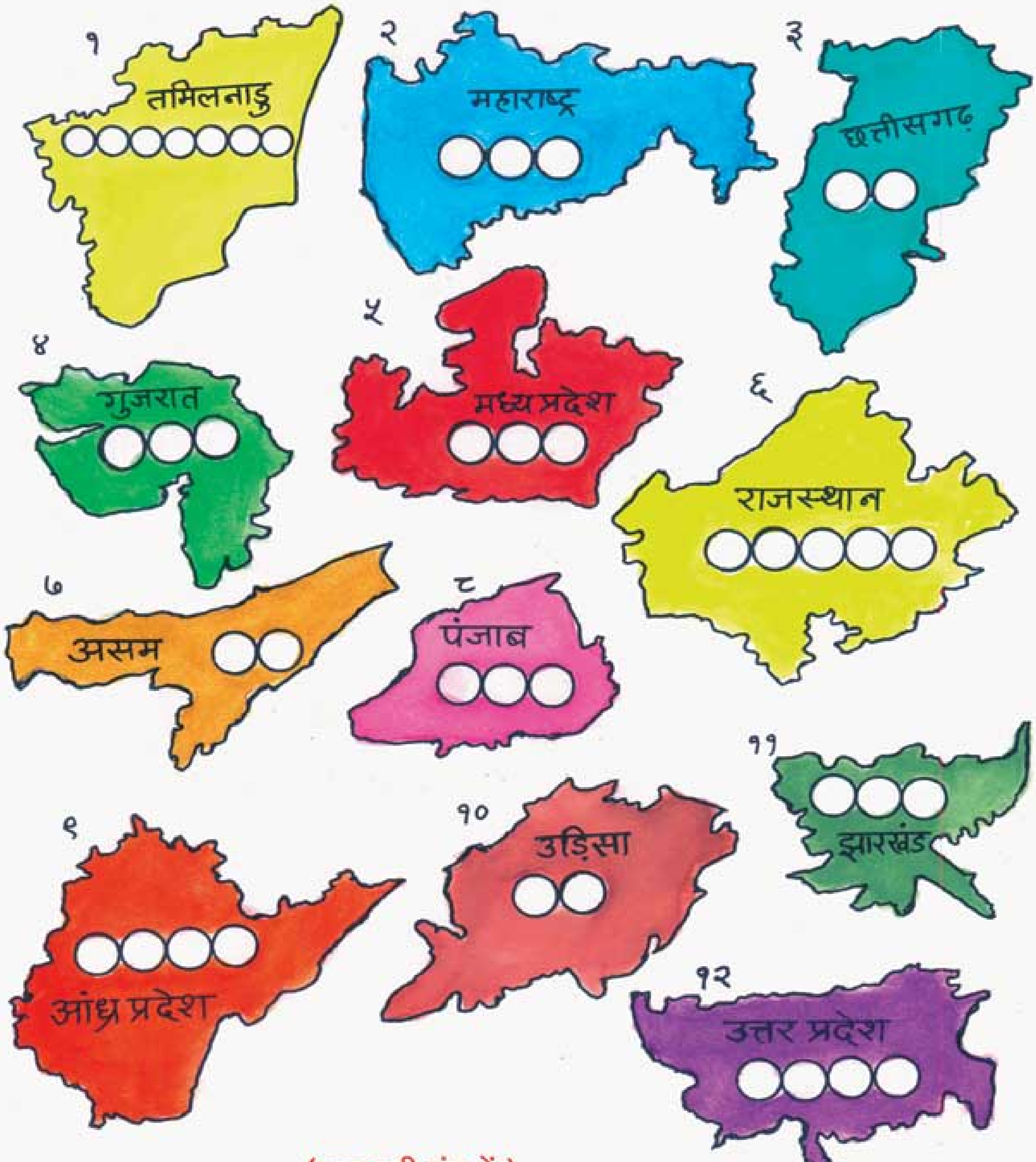

(उत्तर इसी अंक में।)

कॅरियर के रूप में

कला शिक्षा

स्तम्भ : प्रो.(डॉ.)जमनालाल बायती

रंगमंच सम्बन्धी अभिनय, नृत्य तथा संगीत शिक्षा की व्यवस्था दो प्रकार से पाई जाती है। कुछ संस्थान तो इन कलाओं के कलाकार ही तैयार करते हैं, उनका उद्देश्य ही यही होता है, जबकि कुछ अन्य संस्थान इन कलाओं का अभिरुचि के रूप में विकास करते हैं। कई बार जीविका के रूप में भी स्वीकार कर लिया जाता है।

अभिरुचि के रूप में प्रायः इनके शिक्षण की व्यवस्था विद्यालयों या महाविद्यालयों में अपने खाली समय में की जाती है। इनका उद्देश्य खाली समय का सार्थक उपयोग तथा अवकाश का बेहतर उपयोग करना होता है, जबकि दूसरी संस्थाओं का जो इस कार्य के लिए स्थापित की जाती है, उद्देश्य ही उच्च कोटि के कलाकार विकसित करना होता है।

इन संस्थाओं पर एक अन्य वर्गीकरण की दृष्टि से भी विचार किया जा सकता है राजकीय प्रयास तथा निजी क्षेत्र के प्रयत्न।

अभिनय क्षेत्र के संस्थान :

नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा :

यह भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के शिक्षा विभाग के नियंत्रण में कार्य करता है। यह राष्ट्रीय स्तर का अपनी प्रकार का एकमात्र संस्थान है। इस विद्यालय में अभिनय एवं निर्देशन दोनों का प्रशिक्षण दिया जाता है। इसमें १८ से ३० वर्ष की आयु समूह के २० छात्रों को प्रवेश दिया जाता है। चूँकि यह राष्ट्रीय स्तर पर प्रवेश सम्पन्न करता है, इसलिए प्रवेश चाहने वालों को न केवल रंगमंच से जुड़ा होना चाहिए, बल्कि विद्यालय स्तर पर १८–२० या और भी ज्यादा नाटकों में कार्य करने का अनुभव भी होना चाहिए। प्रवेश चाहने वाले की शैक्षणिक उपलब्धि भी उच्च स्तर की होनी चाहिए तथा उसे उच्च माध्यमिक परीक्षा उत्तीर्ण होना चाहिए।

संस्थान में प्राप्त सुविधाएँ :

विद्यालय में प्रवेश के लिए प्रत्येक छात्र को छात्रवृत्ति दी जाती है, शुल्क रहित आवास की व्यवस्था है। विद्यालय में अन्य आवश्यक सुविधाएँ भी उपलब्ध हैं जलपान गृह, डाकघर, विशाल पुस्तकालय, खेलकूद के मैदान आदि। तीन वर्ष तक विद्यार्थियों को गायन, वादन संगीत, नाटक, निर्देशन, मंच सज्जा, प्रकाश व्यवस्था, ध्वनि एवं छायांकन आदि का कठोर तथा सघन प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रशिक्षकों के मार्गदर्शन में अभ्यास कराया जाता है तथा परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद उपाधि पत्र दिया जाता है।

फिल्म इंस्टीट्यूट ऑफ इण्डिया :

इसी प्रकार का एक और संस्थान पूना में है– फिल्म इंस्टीट्यूट ऑफ इण्डिया। यह संस्थान फिल्म और टी.वी. से सम्बन्धित प्रशिक्षण देता है जैसा कि नाम से ही संकेत मिलता है। यहाँ प्रशिक्षित आशार्थी फिल्मों में ही काम करते हों, ऐसा नहीं है। प्रवेश विधि, छात्रवृत्ति,

प्रोस्पेक्टस, अवधि, प्रवेश क्षमता, अभ्यास, छात्रावास आदि के लिए संस्थान के अधिकारी या पंजीयक से पत्राचार किया जाना चाहिए या प्रवेश के लिए समाचार पत्रों के सम्पर्क में रहना चाहिए।

नाट्यकला विभाग :

पश्चिमी बंगाल में स्थित जादवपुर विश्वविद्यालय के नाट्यकला विभाग में भी रंगमंच के प्रशिक्षण की व्यवस्था उपलब्ध है। समय–समय पर वहाँ की प्रवेश विज्ञप्तियाँ भी प्रकाशित होती रहती हैं। अतः प्रवेश के इच्छुक आशार्थियों को समाचार पत्रों के सम्पर्क में रहना चाहिए या विश्वविद्यालय के पंजीयक से पत्राचार कर जानकारी प्राप्त करनी चाहिए।

भारतेन्दु नाट्य संस्थान :

यह लखनऊ में है। इसमें प्रशिक्षण दिया जाता है आशार्थी को निदेशक से पत्र व्यवहार कर प्रोस्पेक्टस मंगवा लेना चाहिए।

अन्य संस्थान :

एशियन एकेडेमी ऑफ फिल्म एण्ड टेलीविजन, दि म्युजिक शॉप, १८ खान मार्केट, नई दिल्ली ११०००३ डिप्लोमा तथा उच्च डिप्लोमा के पाठ्यक्रम की व्यवस्था करते हैं। यह संस्थान इंटरनेशलन फिल्म एण्ड टेलीविजन रिसर्च सेंटर से सम्बद्ध है। अध्ययन के विषय अभिनय–प्रस्तुतिकरण, कैमरा, प्रकाश तकनीक, वीडियो सम्पादन, ध्वनि संग्रहण, टेलीविजन कार्यक्रम का निर्माण, प्रस्तुतिकरण, निर्देशन आदि हैं। प्रवेश क्षमता सीमित एवं छात्रावास की सुविधा उपलब्ध है।

संगीत शिक्षा के संस्थान :

संगीत विषय आरम्भ में विद्यालयों में अन्य विषयों के साथ पढ़ा जा सकता है, पर संगीत विषय में स्नातक या अधिस्नातक शिक्षा की व्यवस्था कम ही महाविद्यालयों या विश्वविद्यालयों में होती है। कुछ संस्थानों में होती भी है, तो वे सामान्यतः परीक्षा लेकर डिग्री या डिप्लोमा नहीं दिलवाते, वे संगीत की कक्षाएँ अभिरुचि के रूप में चलाते हैं।

इन्दिरा गांधी संगीत कला महाविद्यालय :

संगीत की गायनवादन के क्षेत्र में शिक्षा देने वाला भारत तथा भारत के बाहर ख्याति प्राप्त यह संस्थान है। मध्य प्रदेश के खैरागढ़ में यह एकमात्र ऐसा विश्वविद्यालय है, जो एकल संकाय है। इस विश्वविद्यालय में संगीत या ललित कला संकाय ही है अन्य कोई विज्ञान, वाणिज्य, मानविकी, शिक्षा, विधि, समाजकार्य आदि की व्यवस्था नहीं है। स्पष्ट है कि जब एक ही संकाय है तथा राष्ट्रीय स्तर का विश्वविद्यालय है, तो प्रवेश उच्च शैक्षिक योग्यता वाले आशार्थियों का ही होगा।

संगीत विभाग, वनस्थली विद्यापीठ :

इसी प्रकार का एक और ख्याति प्राप्त संस्थान वनस्थली विद्यापीठ है। यहाँ भी गायन, वादन दोनों की शिक्षा व्यवस्था है। प्रवेश राष्ट्रीय स्तर पर योग्यतानुक्रम से होते हैं। संस्थान के भव्य भवन, विशाल पुस्तकालय, आकर्षक खेल के मैदान प्रमुख उल्लेखनीय बिन्दु हैं। अभिरुचि के रूप में अन्य विषयों के अतिरिक्त घुड़सवारी तथा ग्लाइडिंग की भी व्यवस्था है। इसी स्तर का एक और संस्थान है **बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय**। इसके अतिरिक्त कई विश्वविद्यालयों तथा राजकीय महाविद्यालयों में संगीत पढ़ाने की व्यवस्था पाई जाती है।

कई ऐसे निजी संस्थान भी है, जहाँ नियमित पढ़ाई होती है तथा वे विश्वविद्यालयों से सम्बद्ध होने से औपचारिक बी.ए. तथा एम.ए. संगीत विषय से कर सकते हैं। इनके सिवाय कई और भी ऐसी संस्थाएँ हैं, जो सुबह या शाम या दोनों समय शिक्षण की व्यवस्था करती हैं तथा अन्य परीक्षा लेने वाले ख्यातिप्राप्त संस्थानों से परीक्षा दिलवाकर डिग्री या डिप्लोमा दिलवाते हैं। उदाहरण के लिए प्रयाग संगीत समिति, इलाहाबाद का नाम लिया जा सकता है। अब कुछ ऐसा संस्थाएँ भी देखी जा रही हैं, जो अभिरुचि के रूप में संगीत की शिक्षा देती है, कुछ संस्थाएँ संगीत के साथ नृत्य की भी शिक्षा देती हैं। ऐसी संस्थाएँ प्रायः ग्रीष्मावकाश में ही त्वरित गति से प्रकाश में आती हैं, क्योंकि विद्यार्थियों को परीक्षा से छुटकारा मिल

जाता है तथा वे फुर्सत का लाभदायक उपयोग करना चाहते हैं। कुछ संस्थाएँ हैं–

- *भातखण्डे हिन्दुस्तानी संगीत महाविद्यालय, लखनऊ (उ.प्र.)*
- *माधव संगीत महाविद्यालय, इन्दौर*
- *माधव संगीत महाविद्यालय, ग्वालियर*
- *शंकर गधर्व महाविद्यालय, लश्कर, ग्वालियर कला संस्थान, जयपुर (राज.)*
- *विभागीय परीक्षाएँ, प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, बीकानेर (राज.)*
- *त्रिवेणी कला संगम, २०५ तानसेन मार्ग, नई दिल्ली ११०००१*
- *गधर्व महाविद्यालय, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली ११०००२*
- *भारतीय कला केन्द्र, कोपरनिक्स मार्ग, नई दिल्ली ११०००१*
- *कत्थक केन्द्र, बहावलपुर हाऊस, भगवानदास रोड़, नई दिल्ली ११०००२*
- *गंधर्व महाविद्यालय, मुम्बई (महा.)*

संगीत तथा नृत्य के क्षेत्र में भी उच्च शिक्षा के लिए भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के शिक्षा विभाग से आकर्षक छात्रवृत्तियाँ दी जाती है।

रोजगार की सम्भावनाएँ एवं प्रगति :

रंगमंच एक ऐसा क्षेत्र है, जिसकी आवश्यकतानुसार संस्थाएँ देश में नहीं है। इस कला के पारंगत या जानकार कम होते हैं तथा रोजगार के अवसर अधिक होने से मांग बनी रहती है। आज यदि एक कलाकार एक स्थान से, किन्हीं कारणों से काम छोड़ना चाहे, तो अन्य संस्थान उसे वहां से अधिक परिश्रमिक देकर सम्मान के साथ अपने यहां नियोजित कर लेते हैं, क्योंकि प्रथम तो प्रशिक्षित कलाकारों की कमी है, तथा द्वितीय वहाँ का अनुभव उसे लाभकारी स्थिति में पहुँचा देता है।

राजकुमार जैन राजन समाज रत्न २०१६ से सम्मानित

जयपुर। पिंक सिटी प्रेस क्लब जयपुर में १६ अक्टूबर २०१६ को राजस्थान जनमंच एवं परमार्थ एवं आध्यात्मिक समिति की ओर से राज्य की उन विशिष्ट व्यक्तियों को समाज रत्न अवार्ड से नवाजा गया। जिन्होंने शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, खेल साहित्य, कला, समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किए हैं।

मंच के महासचिव व कार्यक्रम संयोजक कमल लोचन ने बताया कि उत्कृष्ट साहित्य सृजन बाल कल्याण व बाल साहित्य उन्नयन, बालकों में पठन–पाठन की रुचि द्वारा संस्कारों के सिंचन हेतु स्वयं के द्वारा साढ़े तीन लाख रुपए मूल्य से अधिक की पुस्तकें निःशुल्क वितरण की है। शब्द शिल्पियों के प्रोत्साहन के लिए भव्य आयोजन कर उन्हें सम्मानित किया। साथ ही उत्कृष्ट साहित्य प्रकाशन हेतु पत्र–पत्रिकाओं को अनुदान देने एवं पुस्तक प्रकाशन हेतु साहित्य संवर्द्धन योजना संचालित करने जैसे विश्वस्तरीय महनीय कार्यों के संपादन के लिए चित्तौडगढ़ जिले के आकोला गांव के राजकुमार जैन 'राजन' को राजस्थान के उच्च शिक्षामंत्री मान. कालीचरण सराफ ने 'समाज रत्न' २०१६ अवार्ड प्रदान कर सम्मानित किया।

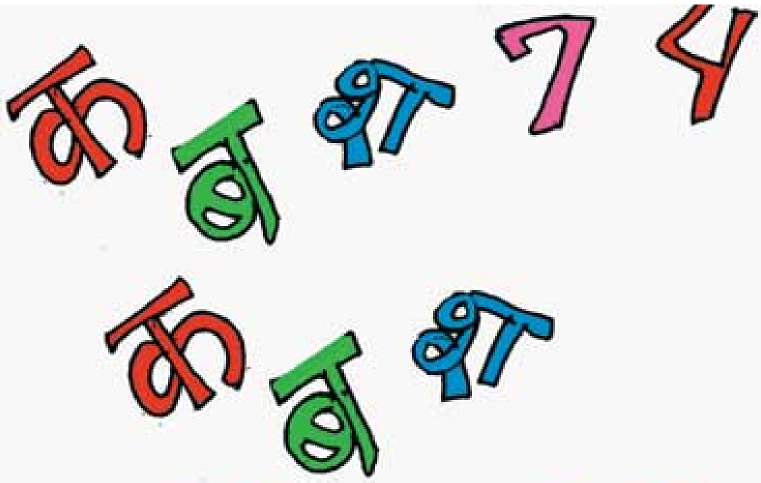

शिक्षा तो है सब का गहना

कविता : कुलभूषण कालड़ा

सुन लो भाई, सुनो बहिना
शिक्षा तो है, सब का गहना
बच्चों को ये राह दिखाती
ज्ञान भरी बातें बतलाती
इसे कभी तुम, न मत कहना
शिक्षा तो है, सब का गहना।
सच्चे होंगे सपने सारे
होंगे तुम, आँखों के तारे
शिक्षा के गुण गाते रहना
शिक्षा तो है, सब का गहना।
पढ़ने से जी नहीं चुराओ
पुस्तक को तुम दोस्त बनाओ
बात समझ लो, भाई बहिना
शिक्षा तो है सब का गहना।।

• पटियाला (पंजाब)

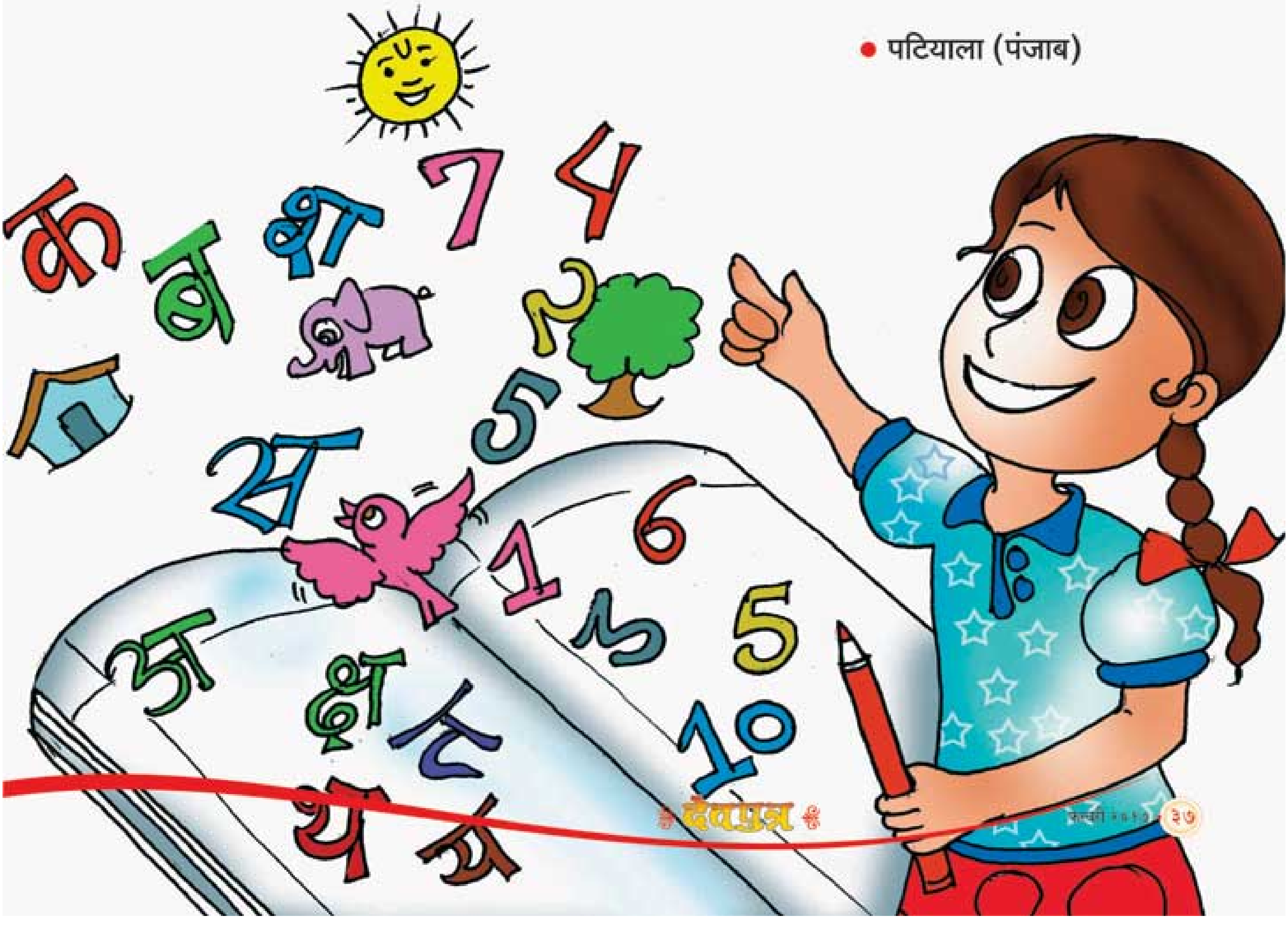

घर बनाओ प्रतियोगिता

कहानी : बद्रीप्रसाद वर्मा 'अनजान'

सर्दी का मौसम आने वाला था। काननवन के सभी पशु–पक्षी अपने लिए भोजन एकत्र करने में लगे हुए थे। ताकि सर्दी में भोजन के लिए भटकना न पड़े। पिछले साल की भयानक सर्दी में न जाने कितने जानवर और पक्षी भूख से तड़प तड़प कर मर गए। इस साल ऐसी नौबत न आए, इसलिए सभी काननवन वासी चार महीने का भोजन जुटाने में लगे हुए थे।

एक रोज जंगल के राजा शेर ने सभी जानवरों और पक्षियों की एक विशेष सभा बुलाकर कहा– ''इस साल हमारी ओर से एक घर बनाओ प्रतियोगिता आयोजित की जा रही हैं। इस प्रतियोगिता कि मैं विधिवत आज के दिन घोषणा करता हूँ। इस प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार दिए जाएंगे। जिनका घर सबसे सुन्दर होगा उसे पहला पुरस्कार दिया जाएगा। इसी तरह दूसरा और तीसरा पुरस्कार भी दिया जाएगा।

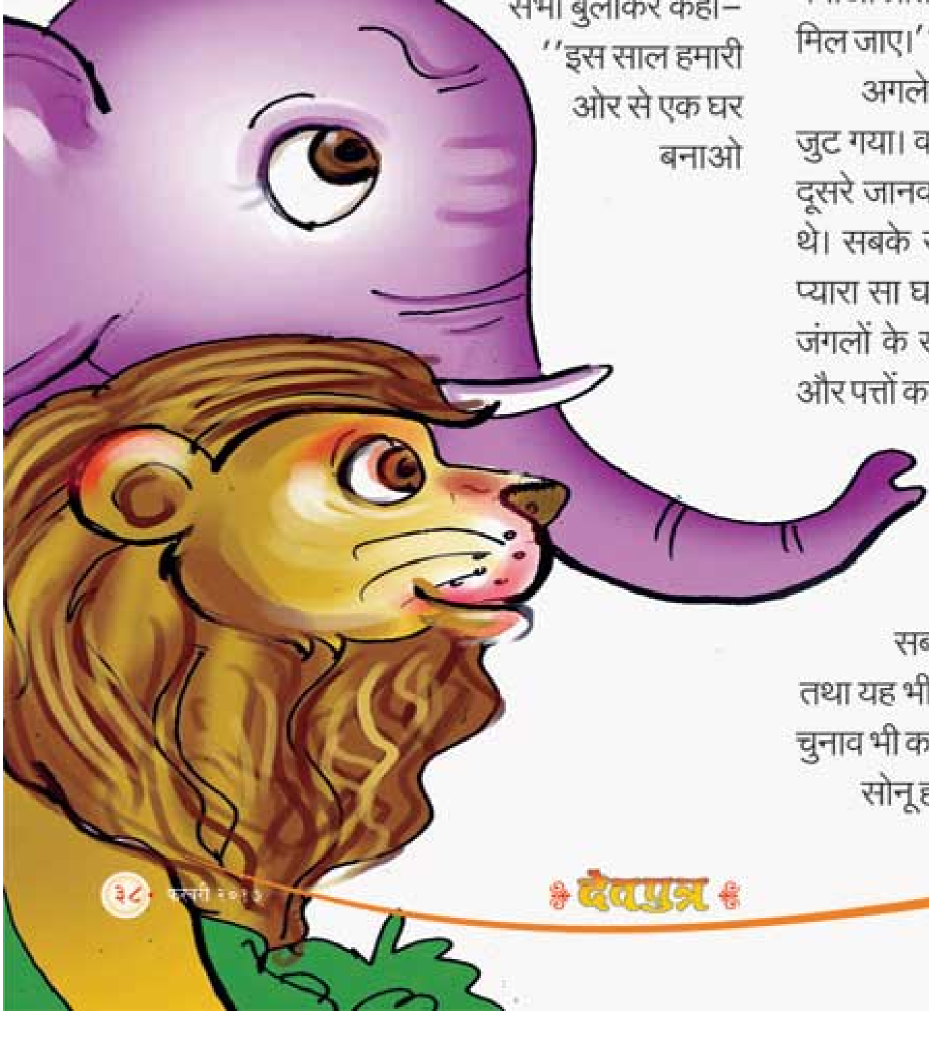

सभा में आए टनटन बंदर खड़ा होकर बोला– ''महाराज आज तक हम बन्दरों ने कभी कोई घर नहीं बनाया है। हमें घर भी बनाना नहीं आता है। हमारे पूर्वजों ने कभी भी घर नहीं बनाया। हम घर कैसे बनाएंगे?''

तुम्हारे पूर्वज इस काम में अकुशल व आलसी थे। क्या तुम भी ऐसे ही बने रहना चाहते हो?'' हम तुम्हें घर बनाने में हर तरह की मदद करेंगे। बंटू भालू सभा में खड़ा होकर टनटन बंदर से कहने लगा।

इस बात पर दूसरे जानवर बोल पड़े–'' हम सब भी तुम्हारी पूरी मदद करेंगे टनटन भाई। क्या पता घर बनाओ प्रतियोगिता में तुम्हारे घर को प्रथम पुरस्कार ही मिल जाए।''

अगले दिन से टनटन बंदर घर बनाने में पूरी तरह जुट गया। वह बरगद के पेड़ पर अपना घर बना रहा था। दूसरे जानवर और पक्षी भी अपना घर बनाने में लगे हुए थे। सबके सहयोग से टनटन बंदर ने लकड़ी का एक प्यारा सा घर बना कर तैयार कर लिया। घर में खिड़की जंगलों के साथ साथ सोने के लिए शाखाओं का पलंग और पत्तों का बिस्तर भी बना कर रख लिया।

जब सब जानवरों और पक्षियों का घर बनकर तैयार हो गया तो इसकी सूचना राजा शेर को भेज दी गई। दो दिन बाद राजा शेर ने अपने मंत्री सोनू हाथी को सबके घरों का निरीक्षण करने के लिए भेज दिया तथा यह भी बता दिया कि आप को तीन सर्वश्रेष्ठ घरों का चुनाव भी करना है। ताकि उनको पुरस्कार दिया जा सके।

सोनू हाथी बारी बारी से सभी जानवरों और पक्षियों

के घरों को देखने के बाद वापस राजा शेर के पास आकर सारी जानकारी दे दी।

राजा शेर सारी जानाकरी पाने के बाद स्वयं जानवरों और पक्षियों के घरों को रात में देखकर वापस आ गए। इस बात की किसी को जरा सी भी जानकारी नहीं हुई।

अगले दिन राजा शेर ने घोषणा की कि आज शाम को एक सभा कर के घर बनाओ प्रतियोगिता के परिणाम घोषित किया जाएगा। सभी जानवर यह घोषणा सुनकर सभा स्थल पर आ कर जमा होने लगे।

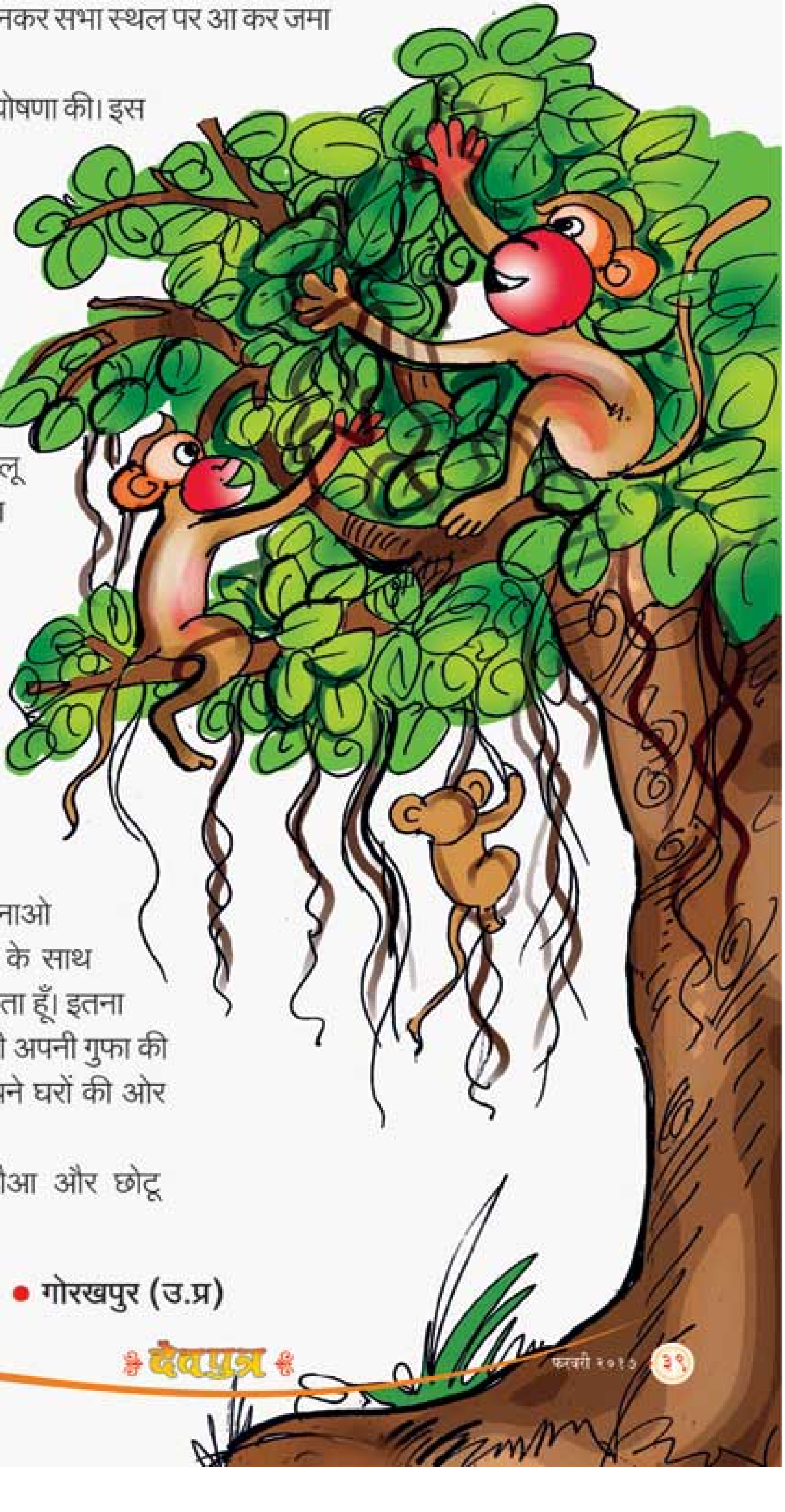

शाम को राजा शेर एक मंच पर खड़ा होकर घोषणा की। इस साल की घर बनाओ प्रतियोगिता का प्रथम विजेता टनटन बंदर रहेगा। टनटन बंदर ने पहली बार अपने किए घर बनाकर एक नया इतिहास रचा है। इसलिए टनटन बंदर हम बधाई देते हैं। हमें विश्वास है टनटन बंदर की तरह दूसरे बंदर भी अपना अपना घर बनाकर उसमें रहेंगे।

इस प्रतियोगिता का दूसरा विजेता कालू कौआ का मकान रहा। कालू कौआ ने इतना बढ़िया घर बनाया है कि आंधी तूफान में भी वह नहीं गिर सकता है न उसके घर में सर्दी लग सकती है। कालू कौआ को हम दूसरा विजेता घोषित करते हैं।

घर बनाओ प्रतियोगिता के तीसरे विजेता रहे छोटू खरगोश। हमें उनका घास फूस से बनाया घर बहुत ही प्यारा लगा। छोटू खरगोश को मैं तीसरा विजेता घोषित करता हूँ। अगले साल फिर घर बनाओ प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी। इन्हीं बातों के साथ आज की यह सभा समाप्त करने की घोषणा करता हूँ। इतना कह कर राजा शेर मंच से नीचे उतर कर पैदल ही अपनी गुफा की ओर चल दिए और दूसरे जानवर और पक्षी अपने घरों की ओर जाने लगे।

पुरस्कार पाकर टनटन बंदर, कालू कौआ और छोटू खरगोश खुशी से गदगद हो गए।

• गोरखपुर (उ.प्र)

आपकी पाती

आपका संपादकीय लेख मनुष्य का निर्माण पढ़ा, बहुत अच्छा लगा, साधुवाद। मोबाईल, वीडियोगेम, हैरीपॉटर के संग बढ़ने वाली आज की पीढ़ी अपने सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों से वंचित होती जा रही है। इस तरह के लेख और कहानी उसके लिए मार्गदर्शक हो सकते हैं। आज नैतिक शिक्षा को पढ़ाया जा रहा है। साधुवाद।

◀◀ सारिका मुकेश, वैल्लौर (तमिलनाडू)

देवपुत्र गणितांक पढ़कर ऐसा लगा जो चीज या ज्ञान देवपुत्र में नहीं है वह दुनिया में कहीं नहीं है और दुनिया के वेद, पुराण, शास्त्र में यदि कुछ है तो वह देवपुत्र में अवश्य मिलेगा। देवपुत्र वास्तव में प्राचीन लुप्त धरोहर को दुनिया के सामने उजागर करने का कार्य कर रहा है। ऐसी ज्ञानवर्धक पत्रिका प्रकाशन के लिए आपको कोटि कोटि धन्यवाद। बहुत पहले रामायण, महाभारत प्रश्नोत्तरी देते थे लेकिन कुछ समय से बंद है। आपसे आग्रह है संभव हो तो उसे जरूर शामिल करें।

◀◀ अनिरुद्ध शर्मा, चीचली (म.प्र.)

॥ समाचार ॥

विशेषांक लोकार्पण

इन्दौर। ५ जनवरी २०१७ श्री गुरुगोविन्द सिंह जी के ३५०वें प्रकाशपर्व पर आयोजित विराट समारोह में देवपुत्र के उन पर निकले विशेषांक का लोकार्पण श्रीगुरुसिंघ सभा के पदाधिकारियों श्री जसबीरसिंह जी गांधी (अध्यक्ष), श्री रिंकु भाटिया (सचिव), श्री कलसी जी, अल्प संख्य आयोग म.प्र. के पूर्व सदस्य की महत्वपूर्ण उपस्थिति में महापौर श्रीमती मालिनी गौड़ ने किया। इस अवसर पर डॉ विकास दवे और श्री गोपाल माहेश्वरी उपस्थित रहे।

बाल प्रस्तुति

चिड़िया

कविता : पूर्वी ठाकुर

चूँ चूँ करती है यह चिड़िया।
खेल दिखाती है यह चिड़िया।
फुदक- फुदक कर गाती चिड़िया।
सबका मन बहलाती चिड़िया।
चुन-चुन दाना लाती चिड़िया।
सबके मन को भाती चिड़िया।
देखो कितनी प्यारी चिड़िया।
मेरी और तुम्हारी चिड़िया।

● रायसेन (म.प्र.)

हमारे राज्य पुष्प

उड़ीसा का राज्य पुष्प

अशोक का फूल

कविता : डॉ. परशुराम शुक्ल

भारत के समतल भागों में,
फूल अनोखा मिलता।
देश बाँग्ला, श्रीलंका में,
सभी जगह यह खिलता।
कमल समान फूल अति सुन्दर,
तालाबों में मिलता।
रुके हुए उथले पानी में,
प्रायः दिन में खिलता।
पौधे की मजबूत जड़ें सब,
मिट्टी में घुस जातीं।
और तैरतीं गोल पत्तियाँ,
पानी में उतरातीं।
धवल श्वेत पंखुड़ियाँ इसकी,
इसका रूप सजातीं
मध्य भाग की पीली केसर,
सबके मन को भाती।
अंग सभी उपयोगी इसके,
काम बहुत से आते।
इनको खाते, दवा बनाते,
धन भी खूब कमाते।

• भोपाल (म.प्र.)

पुस्तक परिचय

लल्ला लल्ला लोरी

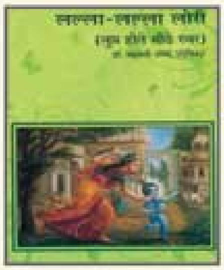

डॉ. मालती शर्मा 'गोपिका' द्वारा बाल साहित्य जगत से लुप्त हो रही विधा लोरी पर शोधपूर्ण जानकारी से भरपूर विवेचना पुस्तक

प्रकाशक – क्षितिज प्रकाशन
१६, कोहीनूर प्लाजा,
एलफिंस्टन रोड़, पुणे ०३ (महा.)

मूल्य १५०रु.

सम्यक लघुकथाएं

सुश्री मीरा जैन द्वारा लिखी बोधपूर्ण मर्मस्पर्शी १०० लघुकथाओं का महत्वपूर्ण संकलन

प्रकाशक – बोधि प्रकाशन
एफ ७७, सेक्टर-९ रोड नं.११
करतापुर इण्डस्ट्रियल एरिया, बाईस गोदाम, जयपुर ३०२००६

मूल्य २५०रु.

सुप्रसिद्ध बाल रचनाकार डॉ. माघीलाल यादव द्वारा रचित एवं वैभव प्रकाशन अमीन पारा चौक, पुरानी बस्ती, रायपुर (छ.ग.) द्वारा प्रकाशित बाल कविताओं के सुन्दर इकरंगे चित्रों से सज्जित छोटे-छोटे पर मनमोहक संकलन प्रत्येक का मूल्य २०रु.

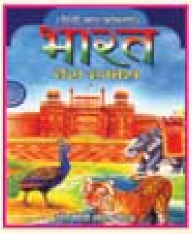

भारत देश हमारा

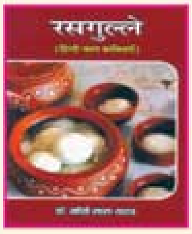

रसगुल्ले

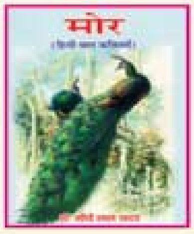

मोर

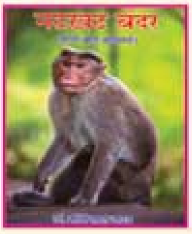

नटखट बंदर

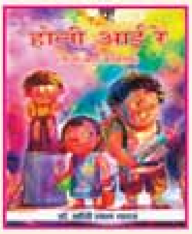

होली आई रे

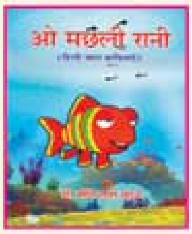

ओ मछली रानी

चंदामामा

तो कितना अच्छा होता

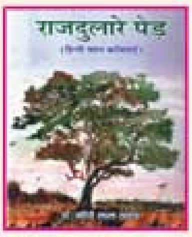

राजदुलारे पेड़

बाल साहित्यकार विनीता श्रीवास्तव द्वारा लिखित ३५ बाल गीतों का बहुरंगी चित्रों से सुरुचिपूर्ण सज्जित बाल गीत संग्रह

प्रकाशक – जागरण साहित्य समिति जबलपुर (म.प्र.) मूल्य २००रु.

अनूठा निबंध
चित्रकथा - देवांशु वत्स
राम और उसका भाई सुब्बू एक ही कक्षा में पढ़ते थे। एक दिन...
बच्चो, कल तुम लोग अपने परिवार पर निबंध लिख कर लाना।
जी !
और कोई किसी की नकल नहीं करेगा।
दूसरे दिन...
अरे राम और सुब्बू। तुम लोगों के पिताजी तो एक ही व्यक्ति है न?
फिर तुम दोनों ने अपने पिताजी का नाम अलग अलग क्यों लिखा
अरे, गुल्लू, एक ही नाम लिख दूंगा तो आचार्य जी को लगेगा कि...
...हम दोनों ने एक दूसरे की नकल की है! !
!!
समाप्त

ऐसा बने रिमोट

कविता : डॉ. शेषपाल सिंह 'शेष'

दिन-दिन भर हम खेलें कूदें।
नहीं पुस्तकों से हम जूझें।
पल में होमवर्क हो जाए,
ऐसा बने रिमोट।
हाथ गुरुजी के रुक जाएँ।
पीट न हमको बिलकुल पाएँ।
रौब न चले हमारे ऊपर,
ऐसा बने रिमोट।
टीचर, इंजीनियर, डाक्टर।
हमें बना दे सुपर एक्टर।
सब पर हुकुम हमारा ही हो,
ऐसा बने रिमोट।

• आगरा (उ.प्र.)

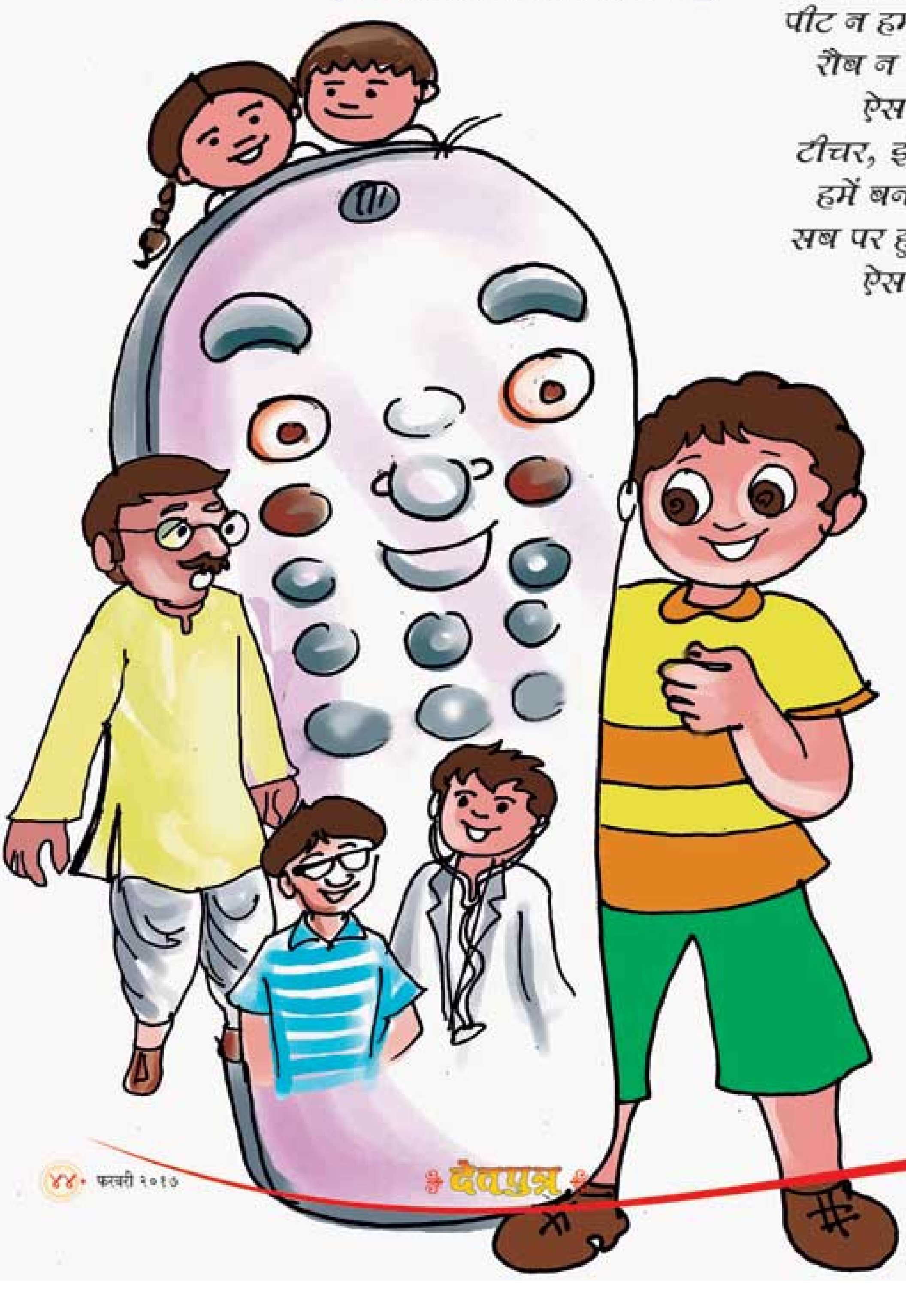

चुटकुले

◀ विष्णुप्रसाद चौहान

मेहमान - जब मैं खाना खाता हूँ, तो तुम्हारा कुत्ता घूरता रहता है।

मेजबान - जी, वह अपनी प्लेट पहचानता है।

****

ग्राहक (ढाबा संचालक से) - मेरे सूप में मकड़ी डूबी पड़ी है।

ढाबा संचालक - तो क्या करूँ? ढाबा चलाऊं या इन्हें तैरना सिखाऊं।

****

सोनू -(पुलिस से) मुझे फोन पर धमकी मिल रही है?

पुलिस- क्या धमकी मिल रही है?

सोनू - टेलीफोन विभाग वाले बोलते हैं बिल नहीं भरोगे तो काट देंगे।

****

एक महिला ने डाक्टर को फोन किया- डॉ. साहब मेरे बच्चे को करंट लग गया है, मैं क्या करूँ?

डाक्टर - पहले तो आप भगवान को धन्यवाद दो कि आपके घर बिजली आ रही है।

****

सोनू - माँ मेरी शिक्षिका अच्छी नहीं है।

माँ - क्यों बेटा?

सोनू - वह एल्जेब्रा में सिखाती है कि दो निगेटिव गुणा होकर एक पॉजिटिव होता है, तो फिर मेरे दो निगेटिव प्रश्न पर एक पॉजिटिव अंक क्यों नहीं देती?

****

सोनू - गाय घास क्यों खाती हैं?

मोनू - ओए, क्योंकि उसके पास कोई चारा नहीं होता।

****

सोनू- क्या तुम बिना खाए जीवित रह सकते हो?

मोनू - नहीं।

सोनू - लेकिन मैं रह सकता हूँ।

मोनू- कैसे?

सोनू - नाश्ता करके और कैसे।

****

एक बार एक चूहा अपना एक पैर आगे निकाले खड़ा था।

किसी ने पूछा - क्यों खड़े हो?

चूहा बोला -हाथी आने वाला है, उसे लंगड़ी फसाऊंगा।

• ढाबला हरदू (म.प्र.)

सही उत्तर

छोटी से बड़ी

२, १, ९, ७, १०, ४, ५, ३, ६, ८

राज्यनृत्य लिखो

(१) भरतनाट्यम् (२) लावणी (३) गरबा (डांडिया)
(४) कक्सर (५) कठपुतली (६) बीहू
(७) भांगड़ा (८) कुचीपुड़ी (९)छाऊ
(१०)जादुर (११) रासलीला

ठिठुरा सूरज

कोहरे की चादर लपेटकर
नन्हा सूरज आया है
कानों में मफलर को बांधे
ठण्ड में वह ठिठुराया है।
दांत बज रहे कट-कट-कट
चेहरा हो गया छोटा सा
ठण्ड में पहना दूँ इसको
काश, मैं स्वेटर मोटासा।
अम्मा थोड़ी आग जला दे
ठिठुरा सूरज तापेगा
गरमी पाकर दौड़ेगा
फिर पूरी धरती नापेगा।

• उज्जैन (म.प्र.)

कविता : राजेन्द्र देवधरे 'दर्पण'

भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता २०१७

प्रिय बच्चो,

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी देवपुत्र के पूर्व व्यवस्थापक स्व. श्री शांताराम जी भवालकर की पावन स्मृति (७ जनवरी) के अवसर पर **भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता** के लिए आपकी स्वरचित बाल कहानियाँ प्रविष्टि के रूप में आमंत्रित हैं। प्रतियोगिता केवल बाल लेखकों के लिए है अतः कहानी के स्वरचित, मौलिक एवं अप्रकाशित होने के प्रमाण पत्र के साथ अपना पूरा नाम कक्षा एवं घर के पते का पिनकोड सहित स्पष्ट उल्लेख अवश्य करें।

आपकी बाल कहानी हमें ३१ मार्च २०१७ तक अवश्य प्राप्त हो जाना चाहिए। कहानी इस पते पर भेजें–

पुरस्कार

प्रथम : १५००/– • द्वितीय : ११००/– • तृतीय : १०००/–

५५०/– के दो प्रोत्साहन पुरस्कार

भवालकर स्मृति
कहानी प्रतियोगिता २०१७
देवपुत्र
४०, संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.)

चूहे जी की बारात

कविता : अविनाश मिश्र 'अवि'

सजकर चूहे की चली बरात,
सजी है ढोल-नगाड़ों के साथ।
पहने सबने नये लिबास,
मस्ती में दिख रहे हैं खास।
दूल्हे की खुशी का नहीं ठिकाना,
नाच रहे हैं नानी-नाना।
दादा जी की बात निराली,
बाँधे सर पे पगड़ी लाली।
झूम रहे हैं चाची-चाचा,
मामा कर रहे खूब तमाशा।
बहन, बुआ हो रही हैं पागल,
नाच रही हैं पहन के पायल।
सब भाई नाचे दे-दे ताल,
सजकर चूहे की चली बारात।

● झाँसी (उ.प्र.)

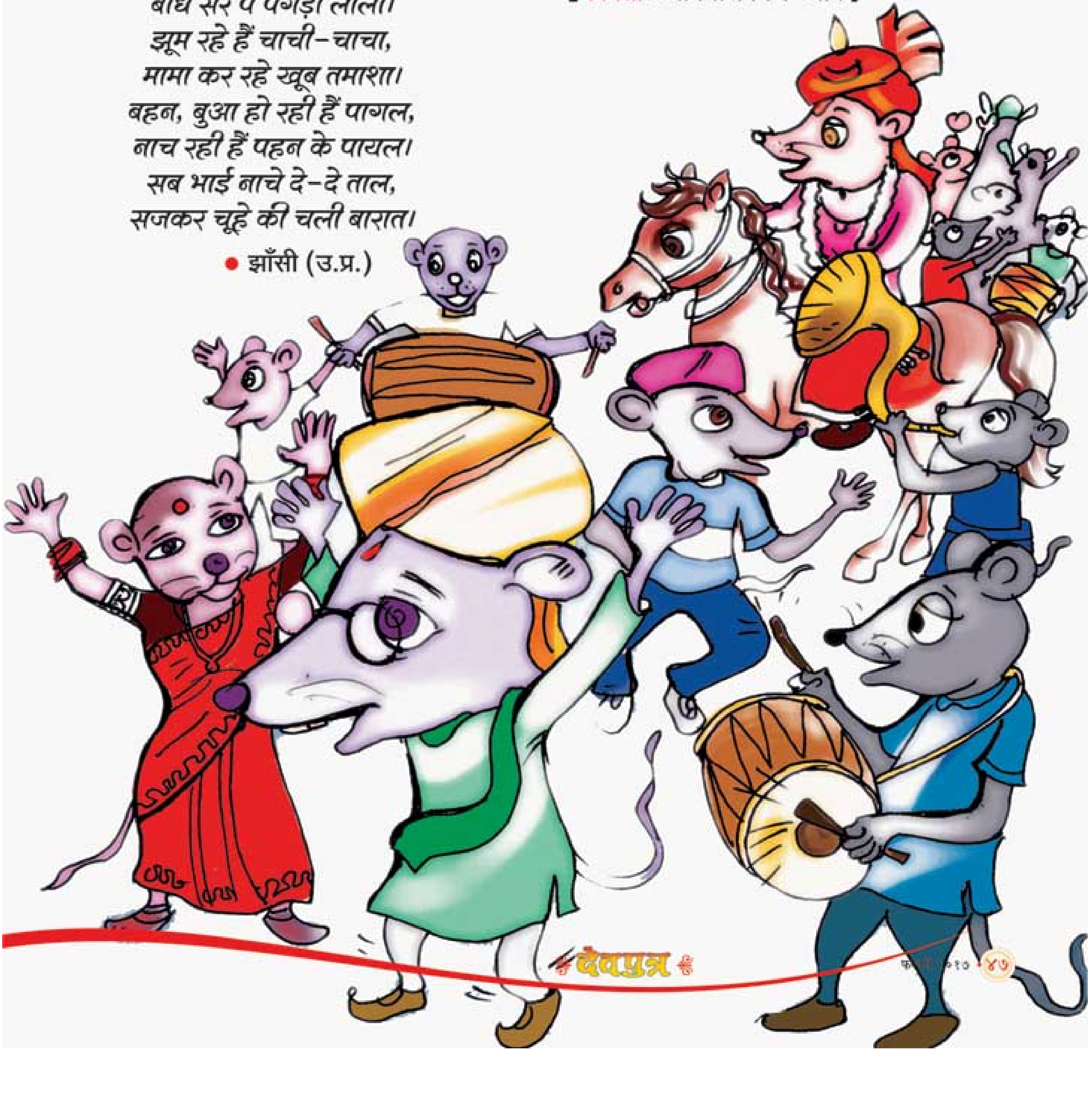

ऑनलाइन म.प्र. रेवेन्यू केस म

''एक सरल, पारदर्शी एवं विश्वसनीय राजस

रेवेन्यू केस मैनेजमेंट सिस्टम (R
ई-गवर्नेंस पहल है, जिसके द्व
प्रचलित प्रकरणों के विषय में जा
कार्यरत राजस्व न्यायालयों की
से प्रबंधन करने में मदद मिलती है

आम नागरिकों के लिये सुविधाएँ

- **ऑनलाइन आवेदन जमा करने की सुविधा :** राजस्व न्यायालयों में आवेदन वेबपोर्टल तथा लोक सेवा केंद्र/एम.पी. ऑनलाइन के माध्यम से ऑनलाइन दर्ज किए जा सकेंगे।
- **ऑनलाइन कॉज लिस्ट/वाद सूची** - राजस्व न्यायालयों में प्रचलित प्रकरणों की आगामी नियत तिथि की जानकारी ऑनलाइन देखी जा सकती है।
- **ऑनलाइन प्रकरण विवरण** - लंबित प्रकरण की अद्यतन स्थिति के बारे में ऑनलाइन जानकारी ली जा सकती है।
- **आदेश की ऑनलाइन प्रति** - आदेश की कॉपी डाउनलोड व प्रिंट प्राप्त करने की सुविधा प्रदान की गई है।
- **एस.एम.एस. सुविधा** - प्रकरण से संबंधित अद्यतन स्थिति की जानकारी मोबाईल अलर्ट द्वारा प्राप्त होगी।

प्रदेश के सभी राजस्व
ऑनलाइन

- न्यायालय नायब तहसीलदा
राजस्व मंडल तक सभी
ऑनलाइन प्रणाली से जोड़े ज
- प्रदेश के 1300 से अधि
ऑनलाइन प्रणाली (RCMS)
- 3,00,000 से अधिक पुरा
प्रकरणों की प्रविष्टि ऑनला
की जा चुकी है।

"http://rcn

मैनेजमेंट सिस्टम

स्व प्रणाली का आरंभ''

परिचय

RCMS) मध्यप्रदेश शासन की एक वेब आधारित
ारा नागरिकों को राजस्व न्यायालयों में उनके
नकारी प्रदान की जाती है तथा विभिन्न स्तर पर
कार्य प्रणाली का ज्यादा बेहतर व पारदर्शी तरीके
है।

श्री शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री

व न्यायालय

ार से लेकर न्यायालय
राजस्व न्यायालय उक्त
ा चुके हैं।

क राजस्व न्यायालय
से जोड़े जा चुके हैं।

ने लंबित एवं नए राजस्व
इन प्रणाली (RCMS) में

ऑनलाइन प्रणाली के लाभ

- **पारदर्शिता :** राजस्व न्यायालयों के कार्यों में पारदर्शिता एवं सरलता आएगी।
- **समय सीमा में निराकरण :** राजस्व न्यायालयों के ऑनलाइन हो जाने से प्रकरणों का निराकरण तय समय–सीमा में हो सकेगा।
- **निगरानी :** राजस्व न्यायालयों की गतिविधि एवं प्रकरणों के निराकरण पर नजर रखने के लिए यह सॉफ्टवेयर एक बेहतर प्रणाली साबित होगी।
- **कार्य में दक्षता :** स्व–चालन कार्यप्रवाह तथा बेहतर निगरानी से राजस्व न्यायालयों के कार्य में दक्षता आयेगी।

R.O. No. D- 80304

आकल्पन : म.प्र. माध्यम/2016

ms.mp.gov.in/"

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

शुल्क वृद्धि सूचना

आत्मीय ग्राहकों !

आप सबका देवपुत्र के प्रति स्नेह और दुलार ही कारण है कि देवपुत्र अपने निरंतर प्रकाशन के ३७ वर्ष पूरे कर रहा है। इसके बहुरंगी कलेवर, सामग्री और साज सज्जा को पसंद करने के लिए हम आपके आभारी है।

कागज मुद्रण और प्रेषण की लागत में निरंतर वृद्धि से विवश होकर तीन वर्ष बाद एक बार पुनः इसकी सदस्यता दरों में वृद्धि करने का निर्णय हुआ है।

सरस्वती बाल कल्याण न्यास की बैठक में लिए निर्णयानुसार आगामी सत्र से इसकी सदस्यता दरें इस प्रकार रहेंगी।

एक अंक	२०/- रु.
वार्षिक सदस्यता	१८०/-रू.
त्रैवार्षिक सदस्यता	५००/-रू.
पंचवार्षिक सदस्यता	७५०/-रू.
आजीवन सदस्यता	१४००/-रू.
सामुहिक वार्षिक सदस्यता (कम से कम १० अंक लेने पर)	१३०/-रू. प्रति सदस्य

आलोक :

- नगरीय विद्यालयों के लिए यह दरें १ जुलाई २०१७ से व ग्रामभारती के विद्यालयों (जिनकी सदस्यता जनवरी से आरंभ होती है) के लिए १ जनवरी २०१७से लागू रहेंगी।
- संस्थाओं की आजीवन सदस्यता १० वर्ष रहेगी।
- सामूहिक सदस्यता वाले सारे अंक एक साथ भेजे जाते हैं।

- सदस्यता के लिए ड्राफ्ट/धनादेश 'देवपुत्र' के नाम से बनवाइए।
- आनलाईन बैंकिंग से प्राप्त शुल्क की जमापर्ची की छायाप्रति (फोटोकॉपी) भेजना अनिवार्य है।

हमारा विश्वास है कि आपका स्नेह एवं सहयोग पूर्ववत् प्राप्त होता रहेगा।

- संपादक

देश का श्रेष्ठ आधुनिक गुरुकुल
शारदा विहार शैक्षिक संस्थान
CRF- ISO -9001:2008
5th to 12th
Residential School
Only for Boys
Aff. No. - 1030672
C.B.S.E.
भारतीय जीवन मूल्यों के साथ आधुनिक शिक्षण
विद्यालय की प्रतिभाएँ
Digital Education
- टेबलेट द्वारा शिक्षण व्यवस्था, कैम्पस वॉय-फाय साथ ही टिचनेक्ट्स ग्रुप द्वारा तैयार 9 स्मार्ट क्लास, ई- लाईब्रेरी, ई लर्निंग कक्षाएँ एवं 40 कम्प्यूटर की इंटरनेट युक्त प्रयोगशाला।
Activity Based learning
- उच्च स्तरीय शिक्षकों द्वारा प्रयोग आधारित विज्ञान शिक्षण और क्रिया आधारित शिक्षण।
- कक्षा 5 वीं से ही प्रयोग आधारित शिक्षण जिसमें साईस एक्टीविटी, पी.पी.टी. प्रेजेन्टेशन।
- विद्या भारती, शासकीय स्तर में विभिन्न विज्ञान की प्रतियोगिताओं में सहभागिता एवं उत्कृष्ट प्रदर्शन।
- अंग्रेजी, संस्कृत संभाषण के लिए प्रथक से कक्षाएँ।
- विज्ञान रमन समिति द्वारा हस्तलिखित पत्रिका का निर्माण एवं वैज्ञानिक गतिविधियाँ।
Career Counselling
कैरियर मार्गदर्शन के लिए सेमीनार,
(I.I.T., AIEEE, CPMT, NDA, BANKING, C.A.) के लिये कोचिंग की व्यवस्था।
Physical Activities
- 14 खेल शिक्षकों के माध्यम से 23 खेलों का नियमित अभ्यास।
- अंतर्राष्ट्रीय मापदंडों के आधार पर एथलेटिक्स ट्रेक, फुटबाल मैदान, बास्केटबाल कोर्ट व अन्य मैदान।
- कबड्डी, जूडो, कुश्ती, कराटे, के लिए मेट की व्यवस्था एवं एन.सी.सी. की ईकाई।
- राष्ट्रीय शालेय प्रतियोगिता में विद्यालय के भैयाओं की सहभागिता एवं पदक।
वर्ष सहभागिता स्वर्ण रजत कांस्य
2013-14 110 0 0 9
2014-15 112 4 3 1
2015-16 105 8 4 15
2016-17 121 16 15 24
Moral Activities
- आध्यात्मिक एवं नैतिक दृष्टि से संध्यावंदन।
- साप्ताहिक बालसभा, पर्व, उत्सव एवं जयंतियाँ, वार्षिकोत्सव में प्रदर्शनी, रंगमंचीय एवं शारीरिक प्रदर्शन का कार्यक्रम।
- राष्ट्रीय स्तर के महापुरूषों, संतों का भैयाओं को सतत् मार्गदर्शन।
- योग, प्राणायाम ध्यान के लिए ध्यान केन्द्र।
- संगीत, कला, मूर्तिकला, नृत्य एवं अभिनय की नियमित कक्षाएँ।
- समाचार पत्र, पत्रिका एवं छात्रों का न्यूज चैनल।
- भोपाल में विभिन्न प्रतियोगिताओं(विज्ञान, कला, नृत्य,संगीत) में छात्रों की सहभागिता एवं पुरस्कार।
प्रवेश प्रारंभ
सम्पर्क मोबाईल
7747006759
7747006779
के अंतर्गत छात्रों के लिए आई.टी. आई.
की सुविधा।
सरस्वती विद्या मंदिर उच्चतर माध्यमिक आवासीय विद्यालय
शारदा विहार, केरवॉं बॉंध मार्ग भोपाल (म.प्र.) -462044
दूरभाष - 0755- 3203211
फैक्स - 2696642
Email- shardavihar@rediffmail.com
Website- Shardavihar.org

डाक पंजीयन आय.डी.सी./एम.पी./६२३/२०१५-२०१७ आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५

PARWATI PREMA JAGATI

Saraswati Vihar

Affiliated to C.B.S.E. Delhi
A Unit of Vidya Bharti
A World Class Fully Residential Senior Secondary School
Only for Boys

Salient Features & Achievements

- A Centre of excellence in academic, physical emotional and national values.
- N.C.C., N.S.S., Scouts, Smart Classes, Coaching & Support Classes to enable the student to be a perfect personality.
- Well qualified, competent & innovative faculties.
- Well furnished hostels, hygienic mess with Modern equipment.
- Hi-tech Computer Lab with Wi-Fi campus. Every class is smart class.
- Hospital with modern facilities.
- CCTV cameras for securities and proper vigilance.
- Selection of 29 students in S.G.F.I. in 2016.
- Multi purpose Hall for Indoor games - Shooting Range, Archery, Badminton, Taekwondo, Kick-Boxing, Boxing, Judo, T.T. & Outdoor Games Stadium available for Football, Basketball, Climbing Wall.
- Selection of Sahil Gupta in N.D.A. in 2016 batch.
- Excellent board results and substantial selection in various competitive exams.
- Two students qualified the Regional Round of Cryptic Crossword Competition Organised by C.B.S.E. in Shimla City Round.
- Participation of four Students in Intel National Innovative Festival, Bangalore.
- Attractive cash prize scheme for the students showing excellent academic performance.
- Aptitude classes for selected student from class IX onwards for N.D.A., NTSE, PMT etc.

Entrance Test for Class VI & IX for the forthcoming academic session will be held on 19 Feb-2017

Admission Open 2017-2018

Durgapur, P.O.- Bisht Estate Via Jeolikote, Nainital

Ph No.- 05942-235846, 224071,
Mob No.- 7351006369, Fax.- 05942-236853

E-mail Id:- ppjsvihar@gmail.com
Website:- www.ppjsvihar.in

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स, प्रेस कॉम्पलेक्स, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित

प्रधान संपादक - कृष्णकुमार अष्ठाना